श्रीगोपाल पाठावली

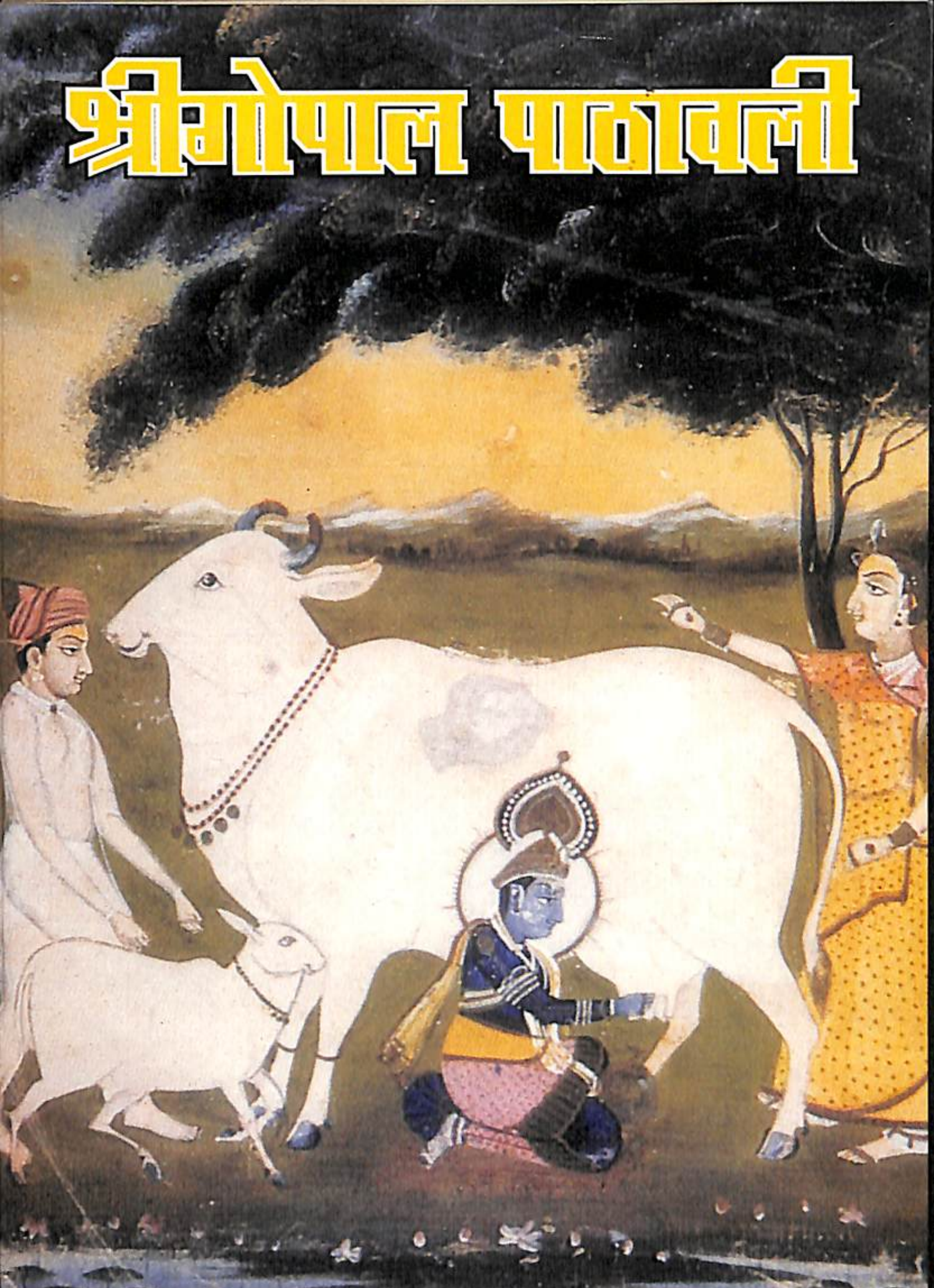

वृन्दावन शोध संस्थान • वृन्दावन

श्रीगोपाल पाठावली

सम्पादक

चन्द्रधर त्रिपाठी • गोपालचन्द्र घोष

वृन्दावन शोध संस्थान
रमण रेती, वृन्दावन—२८११२१ (उ.प्र.) भारत

Sri Gopal Pathavali : A collection of rare stotras dedicated to Gopal selected from rare handwritten manuscripts preserved at Vrindavan Research Institute, Vrindavan.

आवरण :
वृन्दावन शोध संस्थान में संरक्षित गोदोहन लीला का दुर्लभ चित्र;
चित्रकार और काल अज्ञात.

© वृन्दावन शोध संस्थान, वृन्दावन

प्रथम संस्करण—मई १९९९

मूल्य :
पुस्तकालय संस्करण : एक सौ रुपये
साधारण संस्करण : चालीस रुपये

प्रकाशक :
वृन्दावन शोध संस्थान
रमणरेती, वृन्दावन—२८११२१ (उ. प्र.) भारत

मुद्रक :
चित्रलेखा, श्रीहरिनाम प्रेस, वृन्दावन

श्रीचैतन्य फौजदार कुञ्ज, वृन्दावन में सेवित स्वयं प्रकट
ठाकुर श्रीगोपालदेवजी

नीलोत्पलदलश्यामं यशोदानन्दनन्दनम्।
गोपिका नयनानन्दं गोपालं प्रणमाम्यहम्।।
—गौतमीय तन्त्र

त्वदीयं वस्तु गोपाल
तुभ्यमेव समर्पये

आमुख

देवक्यां पालितो गर्भे लालितोऽङ्के यशोदया।
यशोदयायुतो बालो गोपालो रमतां हृदि।।

वैदिक काल से अर्वाचीन काल तक ईश्वरोपासना के विभिन्न उपायों में स्तोत्र, कवच सहस्रनामादि की श्रद्धापूर्वक आवृत्ति सारे भारत में प्रचलित रही है। इस उपाय द्वारा अपने–अपने इष्टदेव को प्रसन्न कर भक्तगण आत्मिक शान्ति तथा भगवत्कृपा प्राप्त करते रहे हैं।

वृन्दावन शोध संस्थान के हस्तलिखित ग्रन्थ संग्रह में अनुमानतः पाँच हजार से अधिक स्तोत्र–ग्रन्थ उपलब्ध हैं जिनमें अधिकांश श्रीकृष्ण तथा श्रीराधा से सम्बन्धित हैं।

भगवान् श्रीकृष्ण के बालरूप को गोपाल कहा गया है। गो अर्थात् गाय और उसे पालन करने वाला गोपाल। गो का तात्पर्य वेद से भी है अतः गोपाल का अर्थ हुआ स्वयं वेद को धारण करने वाला। इसी प्रकार गो शब्द का अर्थ इन्द्रियों से भी किया जाता है और तदनुसार गोपाल अर्थात् इन्द्रियाँ सदा जिसके वश में रहें। प्रायः सभी वैष्णव सम्प्रदायों, विशेषतः चतुः सम्प्रदायों में किसी न किसी रूप में श्रीगोपाल की पूजा प्रचलित है। श्रीमद् वल्लभाचार्य द्वारा प्रवर्तित पुष्टि मार्ग में तो श्रीबालकृष्ण की उपासना प्रधान ही है। अन्य सम्प्रदायों के भक्तों–सन्तों ने भी श्रीकृष्ण के बालस्वरूप की स्तुति और उनकी लीला का गान किया है। चैतन्य सम्प्रदाय के महान आचार्य श्रीपाद रूप गोस्वामी जी द्वारा संग्रहीत 'पद्यावली' नामक ग्रन्थ में श्रीकृष्ण लीला एवम् भक्ति से ओतप्रोत अनेक अज्ञात और अल्पख्यात कवियों की रचनाएँ मिलती हैं।

उदाहरणस्वरूप श्रीरघुनाथ दास गोस्वामी द्वारा रचित एक श्लोक लें–

गोपेश्वरीवदनफूत्कृति लोलनेत्रं
जानुद्वयेनधरणीमनुसश्चरन्तम् ।
कश्चित्रवास्मित सुधा मधुराधराभं
बालं तमालदलनीलमहं भजामि ।।

(पद्यावली, १३१)

अर्थात् "गोपेश्वरी यशोदा जी के मुख की फूत्कार से जिसके दोनों नेत्र चंचल हो रहे हैं और किंचित् नवीन हास्य-सुधा से जिसका मुखकमल मधुर प्रतीत हो रहा है, तमालदल सदृश नीलकान्ति वाले ऐसे बालक का मैं भजन करता हूँ।"

वृन्दावन शोध संस्थान में संरक्षित ग्रन्थों में उपलब्ध श्रीगोपालजी से सम्बन्धित पाठों का संग्रह प्रस्तुत ग्रन्थ में श्रीगोपाल पाठावली के नाम से किया जा रहा है। इसमें कुछ ऐसे स्तोत्र भी हैं जो अभी तक अज्ञात या कम से कम अप्रकाशित रहे हैं। ऐसे ग्रन्थों में कुछ का उल्लेख उचित होगा। सम्मोहन तन्त्रोक्त श्रीगोपाल सम्मोहन कवच तथा श्रीगोपाल स्तवराज तथा गौतमीय तन्त्रान्तर्गत अष्टादशाक्षर गोपालमन्त्रध्यान हमारी जानकारी में अभी भी भक्तों या विद्वानों के लिये अज्ञात हैं। गोपालअनुध्यानाष्टकम् भी इसी श्रेणी में आता है। श्रीजीवगोस्वामीकृत गोपालाष्टकम् भी अप्रकाशित रचना है। श्रीगोस्वामीपाद सम्बन्धित ग्रन्थों में इस रचना का उल्लेख भी नहीं है। इसकी एकमात्र प्रति हमारे संस्थान में सुरक्षित है जो श्रीराधादामोदर मन्दिर से प्राप्त हुई थी। बंगला अक्षरों में लिखित यह प्रति लगभग दो सौ वर्ष प्राचीन प्रतीत होती है यद्यपि लिपिकार ने अपने नाम या लिपि सम्वत् का उल्लेख नहीं किया है। इस दुर्लभ ग्रन्थ रत्न का महत्त्व भक्तों और साहित्येतिहास के अन्वेषकों के लिये स्वतः स्पष्ट है।

श्रीधाम वृन्दावन में रेतिया बाजार स्थित श्रीचैतन्य फौजदार कुंज में विराजमान स्वयंभू विग्रह श्रीगोपाल जी के नाम से जाने जाते हैं। यह एक सिद्धस्थल है क्योंकि श्रीरामकृष्ण परमहंस देव

जी ने वृन्दावन आने पर यहीं निवास किया था। उनके निवास का पवित्र कक्ष अब भी सुरक्षित है। श्रीगोपाल की कृपा से सम्पूर्ण हुई श्रीगोपाल पाठावली उन्हीं के श्रीचरणों में समर्पित है। सुखद संयोग है कि वृन्दावन शोध संस्थान परिसर में एक कक्ष में स्थापित श्रीकृष्ण की सेवा पूजा भी गोपाल नाम से ही हम करते हैं।

प्राचीन जीर्ण हस्तलिखित ग्रन्थों से इस संग्रह के स्तोत्रों की प्रतिलिपि की गयी है। प्रतिलिपि करते समय पूरी सावधानी बरतने की चेष्टा की गयी है। साथ ही मूल लिपि में कहीं व्याकरणादि की कोई अशुद्धि दिखायी पड़ी तो यथासम्भव उसे सुधार दिया गया है। तथापि पाठों में कोई अशुद्धि मिले तो सहृदय पाठकवृन्द से हमारा अनुरोध है कि हमें क्षमा करें और अशुद्धि सुधार लें। पाठ की या छपाई की अशुद्धियों की सूचना हमें देने की कृपा करें तो हम अनुगृहीत होंगे और भावी संस्करणों में यथोचित सुधार कर सकेंगे।

श्रीगोपाल पाठावली के स्तोत्रों का संकलन श्रीगोपालचन्द्र घोष ने कई वर्ष पूर्व ही पूरा कर लिया था और वृन्दावन शोध संस्थान के संस्थापक-अध्यक्ष डॉ. रामदास गुप्त इसे तभी प्रकाशित करने के इच्छुक थे। किन्तु अनेक कारणों से यह न हो सका। इसी बीच डॉ. गुप्त जुलाई १९९७ में गोलोकवासी हो गये और संस्थान के कामों में और भी व्यवधान आये । गत एक वर्ष से संस्थान के काम सुचारु रूप से चल रहे हैं और संस्थान अब इस अवस्था में पहुँचा है कि प्रकाशनों का क्रम पुनः आरम्भ हो सके।

इस नवोन्मेष का प्रथम संकेत प्रस्तुत प्रकाशन द्वारा हो रहा है जो निश्चय ही श्रीगोपालजी की अहैतुकी कृपा का फल है। इस अवसर पर हम पुण्यश्लोक डॉ. रामदास गुप्त को भी नमन पूर्वक स्मरण करते हैं।

वृन्दावन	विद्वानों के सेवक
अक्षय तृतीया, सं० २०५६	चन्द्रधर त्रिपाठी
१८ अप्रेल १९९९	गोपाल चन्द्र घोष

आभार

इस ग्रन्थ का प्रकाशन भारत सरकार के राष्ट्रीय संग्रहालय द्वारा प्राप्त अनुदान तथा दिल्ली निवासिनी श्रीमती राधारानी गुजराल द्वारा अपने स्वर्गीय पति भक्तप्रवर बख्शी श्रीहरकिशनलालजी गुजराल की पुण्य स्मृति में दिये दान द्वारा सम्भव हुआ है। राष्ट्रीय संग्रहालय, विशेष रूप से उसके महानिदेशक डॉ. रवीन्द्र देव चौधरी तथा श्रीमती गुजराल के संस्थान और सम्पादकद्वय ऋणी रहेंगे। स्वर्गीय बख्शी जी की पुण्यात्मा श्रीगोपालजी के नित्यधाम में प्रवेश पाये यह प्रभु के चरणों में हमारी प्रार्थना है।

ग्रन्थ को प्रकाशन योग्य रूप देने में संस्थान के अनेक सहकर्मियों ने अपने-अपने कार्यक्षेत्र के अनुसार अमूल्य सहयोग दिया है जिसके लिये वे साधुवाद के पात्र हैं। हम संस्थान के वरिष्ठ शोध सहायक एवम् कैटलागर श्रीवृन्दावन बिहारी गोस्वामी के विशेष आभारी हैं जिन्होंने अत्यन्त मनोयोग से पाठों की शुद्धता निर्धारित करने में हमारी महती सहायता की। इसे आकर्षक रूप से मुद्रित करने का काम बहुत कम समय में श्रीहरिनाम प्रेस के कर्मियों ने डॉ. भागवत कृष्ण नांगिया की अगुवाई में जिस निष्ठा और परिश्रम से किया है, वह श्लाघ्य है। हम उन सबके आभारी हैं। डॉ. नांगिया निश्चय ही एक प्रेस मालिक व्यवसायी मात्र नहीं श्रीगोपालजी के सच्चे भक्त और विद्याव्यसनी सज्जन हैं।

वृन्दावन के रेतिया बाजार में श्रीचैतन्य फौजदार कुंज स्थित श्रीगोपालजी मन्दिर के सेवाधिकारी महन्त श्रीजयगोपाल मुखर्जी ने श्री गोपालजी के विग्रह का छायाचित्र लेने की अनुमति देकर संस्थान और संपादकों को अनुगृहीत किया है। श्रीगोपाल जी का चित्र सर्वप्रथम इस ग्रन्थ में ही छप रहा है। इससे न केवल ग्रन्थ की रूपसज्जा की वृद्धि हुई है वरन् भक्तों के लिये यह अधिक महत्त्वपूर्ण तथा आदरणीय बन गया है। धन्यवाद स्वरूप हम यही कहेंगे कि मुखर्जी महाशय सदा श्रीगोपालजी के कृपापात्र बने रहें।

स्तोत्र सूची

१. पूर्व गोपालतापनीधृत श्रीगोपाल स्तव — १
२. ब्रह्मसंहितायां श्रीगोपालाक्षयकवचम् — ३
३. ब्रह्मसंहितायां त्रैलोक्यसम्मोहन गोपालमंत्रात्मक कवचम् — ५
४. सनत्कुमारतंत्रोक्त श्रीगोपालमन्त्र व्याख्या — १०
५. गौतमीय तंत्रोक्त श्रीगोपाल कवचम् — १२
६. गौतमीय तन्त्रोक्त श्रीगोपालहृदयस्तोत्र — १४
७. गौतमीय तंत्रोक्त दशाक्षर गोपालमंत्र विधि — १८
८. नारद पंचरात्रोक्त श्रीगोपाल कवचम् — २०
९. नारद पंचरात्रोक्त श्रीगोपालस्तवराज — २२
१०. सम्मोहन तन्त्रोक्त सिद्ध श्रीगोपाल कवचम् — २६
११. सम्मोहन तन्त्रोक्त श्रीगोपालस्तवराज — ३२
१२. सम्मोहन तन्त्रोक्त श्रीगोपालसहस्रनामशाप विमोचन — ३६
१३. सम्मोहन तन्त्रोक्त श्रीगोपालसहस्रनाम स्तोत्र — ३८
१४. श्रीगोपाल अष्टोत्तरशतनामावली — ५७
१५. लीलाशुक विल्वमंगलकृत गोपालध्यानम् — ६२
१६. श्रीमद्वल्लभाचार्यपादकृत श्रीनन्दकुमाराष्टकम् — ६३
१७. श्रीमद्रघुनाथदास गोस्वामीकृत श्रीगोपालराजस्तोत्रम् — ६५
१८. श्रीमज्जीव गोस्वामीकृत श्रीगोपालाष्टकम् — ६८
१९. श्रीमद्विश्वनाथ चक्रवर्तीपादकृत श्रीगोपालदेवाष्टकम् — ७०
२०. श्रीनिम्बार्क सम्प्रदायानुकूल श्रीगोपाल अनुध्यानाष्टकम् — ७२
२१. श्रीबालगोपाल दशकम् — ७४
२२. श्रीगोपाल नीराजन स्तव — ७६

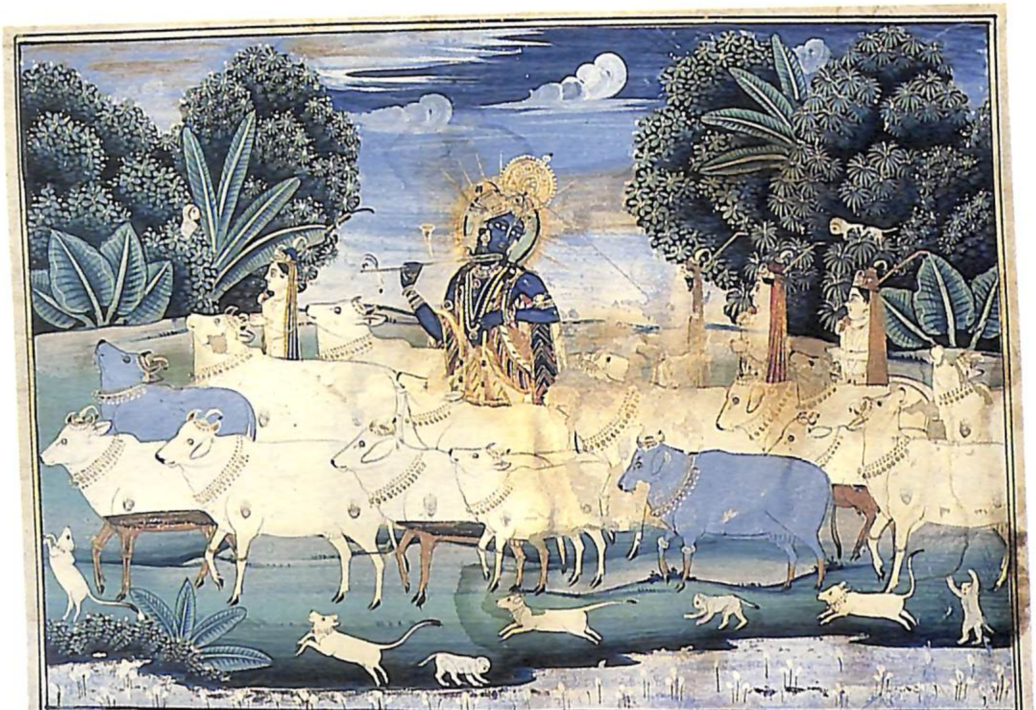

संस्थान में संरक्षित गोचारण-लीला का एक दुर्लभ चित्र
(चित्रकार और काल अज्ञात)

पूर्व गोपाल तापनी धृत

गोपाल स्तव

ॐ नमो विश्वरूपाय विश्वस्थित्यन्त हेतवे।
विश्वेश्वराय विश्वाय गोविन्दाय नमो नमः।।१।।

नमो विज्ञानरूपाय परमानन्दरूपिणे।
कृष्णाय गोपीनाथाय गोविन्दाय नमो नमः।।२।।

नमः कमलनेत्राय नमः कमलमालिने।
नमः कमलनाभाय कमलापतये नमः।।३।।

वर्हापीड़ाभिरामाय रामायाकुण्ठमेधसे।
रमामानसहंसाय गोविन्दाय नमो नमः।।४।।

कंसवंशविनाशाय केशिचाणूरघातिने।
वृषभध्वजवन्द्याय पार्थसारथये नमः।।५।।

वेणुवादनशीलाय गोपालाऽहिमर्दिने।
कालिन्दीकूल लोलाय लोल कुण्डलधारिणे।।६।।

वल्लवीबदनाम्भोजमालिने नृत्यशालिने।
नमः प्रणतपालाय श्रीकृष्णाय नमो नमः।।७।।

नमः पापप्रणाशाय गोवर्धनधराय च।
पूतनाजीवितान्ताय तृणावर्त्त सुहारिणे।।८।।

निष्कलाय विमोहाय शुद्धायांशुद्धवैरिणे।
अद्वितीयाय महते श्रीकृष्णाय नमो नमः।।६।।

प्रसीद परमानन्द प्रसीद परमेश्वर।
आधि व्याधि भुजंगेन दष्टं मामुद्धर प्रभो।।१०।

श्रीकृष्ण रुक्मिणीकान्त गोपीजन मनोहर।
संसार सागरे मग्नं मामुद्धर जगद्गुरो।।११।।

केशव क्लेशहरण नारायण जनार्दन।
गोविन्द परमानन्द मां समुद्धर माधव।।१२।।

ब्रह्म संहितायां

श्रीगोपालाक्षय कवचम्

।। श्रीगणेशाय नमः।।

।। श्रीनारदोवाच।।
इन्द्राद्यामरवर्गेषु ब्रह्मन् यत्परमाद्भुतम्।
अक्षयं कवचं नाम कथयस्व मम प्रभो।।१।।
यद्धृत्वाऽकर्ण्यवीरस्तु त्रैलोक्यविजयो भवेत्।
ब्रह्मोवाच
शृणु पुत्र मुनिश्रेष्ठ कवचं परमाद्भुतम्।।२।।
इन्द्रादिदेववृन्दैश्च नारायणमुखाच्छ्रुतम्।
त्रैलोक्यविजयस्यास्य कवचस्य प्रजापतिः।।३।।
ऋषिश्छन्दो देवता च सदा नारायणः प्रभुः।
ॐ अस्य श्रीत्रैलोक्य विजयाक्षय कवचस्य, प्रजापति ऋषिः अनुष्टुप छन्दः श्रीनारायणःपरमात्मा देवता धर्मार्थ काममोक्षार्थे जपे विनियोगः।।
पादौ रक्षतु गोविन्दो जङ्घेपातु जगत्प्रभुः।।४।।
ऊरु द्वौ केशवः पातु कटि दामोदरस्ततः।
वदनं श्रीहरिः पातु नाडीदेशं च मेऽच्युतः।।५।।

वामपार्श्वं तथा विष्णुर्दक्षिणं च सुदर्शनः।
बाहुमूले वासुदेवो हृदयं च जनार्दनः।।६।।
कण्ठं पातु वराहश्च कृष्णश्च मुखमण्डलम्।
कर्णौ मे माधवः पातु हृषीकेशश्च नासिके।।७।।
नेत्रे नारायणः पातु ललाटं गरुडध्वज।
कपोलं केशवः पातु चक्रपाणिः शिरस्तथा।।८।।
प्रभाते माधवः पातु मध्याह्ने मधुसूदनः।
दिनान्ते दैत्यनाशश्च रात्रौ रक्षतु चन्द्रमाः।।६।।
पूर्वास्यां पुण्डरीकाक्षो वायव्यां च जनार्दनः।
इतिते कथितं वत्स सर्वमन्त्रौघविग्रहम्।।१०।।
तव स्नेहान्मयाख्यातं न वक्तव्यं तु कस्यचित्।
कवचं धारयेद्यस्तु साधको दक्षिणे भुजे।।११।।
देवा मनुष्या गन्धर्वायज्ञास्तत्र न संशयः।
योषिद्वामभुजे चैव पुरुषो दक्षिणे भुजे।।१२।।
विभृयात्कवचं पुण्यं सर्वसिद्धियुतो भवेत्।
कण्ठे यो धारयेदेतत्कवचं मत्स्वरूपिणम्।।१३।।
युद्धे जयमवाप्नोति द्यूते वादे च साधकः।
सर्वथा जयमाप्नोति निश्चितं जन्मजन्मनि।।१४।।
अपुत्रो लभते पुत्रं रोगनाशस्तथा भवेत्।
सर्वतापप्रमुक्तश्च विष्णुलोकं स गच्छति।।१५।।

इति ब्रह्म संहितायां श्रीगोपालाक्षय कवचं सम्पूर्णम्।

ब्रह्म संहितायां

त्रैलोक्य सम्मोहन गोपालमन्त्रात्मक कवचम्

।।श्रीगोपालाय नमः।।

।। श्रीअग्निविन्दुरुवाच।।
अथातः सम्प्रवक्ष्यामि दिव्यमन्त्रौघ पंजर।
सर्वाभीष्टप्रदं सद्यैः सर्वोपद्रवनाशनम्।।१।।
महर्षयः सिद्धमायुः कृष्णद्वैपायनादयः।
ब्रह्मादयस्तथैश्वर्य्यं पठनाद्धारणादपि।।२।।
स्नातोधौतांघ्रि पाणिश्चस्वाचान्त स्वस्तिकासन।
संयत वाक्प्रागास्यः शुचिस्तद्गतमानसः।।३।।
अनुष्टुप महामन्त्र नारसिंहं स्मरेत्ततः।
उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखं।।४।।
नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्युर्मृत्यूं नमाम्यहं।
इति तालत्रयं दत्वा दुष्टान् विद्रावयेत्ततः।।५।।
ॐ नमश्चक्राय स्वाहेन्द्रादि विदिक्षु च।
विनिर्दिश्य गुरुं नत्वा दैवतं च कृतांजलिः।।६।।
तत कन्दर्पबीजेन प्राणायामं समाचरेत्।
त्रैलोक्य संमोदस्यास्य कवचस्य महामुनिः।।७।।

आनन्द नारदः प्रोक्तो गायत्रीच्छन्द ईरितम्।
दैवं कृष्णः सर्वसिद्धौ विनियोगः प्रकीर्त्तितः।।८।।
दधिभक्षणाय स्वाहाः हृदयाय नमो न्यसेत।
क्लीं कृष्ण शिरसे स्वाहा अक्षरः सर्वकामदः।।६।
गोपवल्लभाय स्वाहेति शिखायै वषटाचरेत्।
गोपीजनवल्लभाय स्वाहेति कवचाय हुम्।।१०।।
गोपालाय ततः स्वाहा अस्त्राय फडिति विन्यसेत्।।११।।
ततश्च कामबीजेन, सर्वांगे व्यापकं त्रिशः।
क्लीं कृष्ण क्लीं चतुर्वर्णः वर्णानांतु शिखामणिः।।१२।।
क्लीं कृष्णाय ततः स्वाहा शिरः पातु षडक्षरः।
वाग्बीजं ह्रीं रमाबीजं द्रीं, ब्रीं, ज्रीं, क्रीं वदेत्ततः।।१३।।
ततो जय जयेत्युक्ता कृष्ण कृष्ण निरन्तरं।
क्रीडासक्त प्रमुदितं चेतसे पदमुद्धरेत्।।१४।।
नित्यप्रियाय कृष्णाय स्मर बीजं ततोन्यसेत्।
गोपीजनवल्लभाय स्वाहा श्रीं ह्रीं च वाग्भवम्।।१५।।
भालं सम्मोहनः पातु पंचाशद्धधिकाक्षरः।
अथ तारो रमा ह्रीं क्लीं श्रीकृष्णाय पदं वदेत्।।१६।।
श्रीगोविन्दाय पदस्यान्ते, श्रीगोपीजन पद इत्यपि।
वल्लभाय श्रीं श्रीं श्रीं पंचविंशति वर्णकः।।१७।।
सिद्ध गोपाल मन्त्रोयं, भुवौ मे परिरक्षतु।
क्लीं पातु लोचनद्वन्दमेकार्णः सर्वमोहनः।।१८।।
श्रीलज्जा स्मर वाग्बीजं सौस्तारो भुवनेश्वरी।
रमा मदन कृष्णाय रं कं एं ईं लं पदं ततः।।१६।।

ह्रीं गोविन्दाय सं कं हं लं ह्रीं पुनरुद्धरेत्।
गोपीजनवल्लभाय सकल ह्रीं वह्निवल्लभा।।२०।।
ततः सौं वाग्भवं कामं माया लक्ष्मीर्महामनुः।
षट् चत्वारिंशदर्णायं कर्णयुग्मं च रक्षतु।।२१।।
क्लीं कृष्णाय चतुर्वर्णः परिरक्षतु नासिकां।
तारं नमो भगवते श्रीगोविन्दाय इत्यपि।।२२।।
द्वादशार्णः सदा पातु मम जिह्वा महामनुः।
क्लीं कृष्णाय पदस्यान्ते गोविन्दाय पदं पुनः।।२३।।
गोपीजनवल्लभाय स्वाहाष्टादशवर्णकः।
सर्व मन्त्रादिराजोऽयं मुखं रक्षतु मे सदा।।२४।।
क्लीं ग्लौं क्लीं श्यामलांगाय नमः पातु कपोलयोः।
वाग्बीजस्मर कृष्णाय ह्रीं गोविन्दाय पदं ततः।।२५।।
श्रीं गोपीजनवल्लभाय स्वाहा सौमर्वरुतमः।
द्वाविंशत्यक्षरः पातु वागीश स्त्वत्प्रसाधकः।।२६।।
अथातो नन्दपुत्राय श्यामलांगाय चोद्धरेत्।
ङें तौ बालवपु कृष्णो गोविन्दाय ततः परं।।२७।।
गोपीजनवल्लभाय स्वाहा द्वात्रिंशद् वर्णकः।
सर्वैश्वर्य्य युतो मन्त्रः स्कन्धयो परिरक्षतु।।२८।।
श्रीमाया स्मर कृष्णाय गोविन्दायाग्नि वल्लभा।
द्वादशार्णो महामन्त्रो भुजयोः परिरक्षतु।।२६।।
श्रीं ह्रीं स्मरदशार्णश्च स्मरमाया रमा ततः।
षोडशार्णो महामन्त्रः पातु हस्तद्वयं मम।।३०।।
अष्टार्णं पातु हृदयं सुप्रसन्नात्मने नमः।
बाललीलात्मने हुं फट् जठरं वसुवर्णकः।।३१।।

पंचार्णः कुक्षियुग्मं तु कृष्णाय नमः इत्यपि।
क्लीं कृष्णाय गोविन्दाय नाभिं पात्वष्ट वर्णकः।।३३।।
श्रीं ह्रीं कृष्णाय स्वाहेति सप्तार्णः सक्थिनी मम।
त्रयोदशाक्षरः पातु शक्ति श्रीस्मर पूर्वकः।।३४।।
गोपीजनवल्लभाय स्वाहा उरुद्वयं मम।
अष्टादशार्णको मे तु गुह्यं च परिरक्षतु।।३५।।
कृष्णेति द्वयक्षरः पातु जानुनी मम सर्वदा।
अष्टादशाक्षरो ह्रीं श्रीं पूर्वकोविंशदक्षरः।।३६।।
सर्वसिद्धिप्रदो मन्त्रः जंघां पातु सदैवतु।
अष्टादशाक्षरो गोपालक वेषधराय च।।३७।।
वासुदेवाय हुं फट् स्वाहेति चरणद्वयं।
सर्वांगं पातु मे लोला दण्डगोपी पदं ततः।।३८।।
जन संसक्त दौर्दण्ड बाल रूपी पदं ततः।
मेघश्यामाथ भगवान् विष्णोस्वाहेति मन्त्रकः।।३९।।
एकोनत्रिंशद्वर्णोयं सर्व सम्पत्प्रदायकः।
श्रीमन्मुकुन्द चरणौस्तदा शरणमुद्धरेत्।।४०।।
अहं प्रपद्य इत्युक्तो मुकुन्दाष्टादशाक्षरः।
स्मृति धृति मनोबुद्धि पातु चित्तमहंकृति।।४१।।
स्मरश्च हृषिकेशाय नमोवस्वक्षरोमनुः।
पापान्मेन्द्रियग्रामं सर्वशक्ति समन्वितः।।४२।।
देवकीसुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणागत।।४३।।
अयं दन्तलिपिर्मन्त्रः पातु मे सुत गोधनं।
मन्त्रोयमत्र रूपं ते रसरूपं पदं वदेत्।।४४।।

तुष्टिरूपं नमोद्वन्द्वमन्त्राधिपतये मम।
अन्नं प्रयच्छ स्वाहेति त्रिंशदर्णोन्नदोमनु।।४५।।
तुष्टिं पुष्टिं बलं प्राणं धनंधान्यं समावतु।
कालियस्य फणामध्ये दिव्यं नृत्यं करोतितम्।।४६।।
नमामि देवकी पुत्रं नृत्यराजानमच्युतं।
कालकूटजरादिभ्यः सर्वेभ्यः परिरक्षतु।।४७।।
तारो नमो भगवते वासुदेवाय इत्ययं।
अर्कार्णो मनिरुद्धार्थः पातुदिक्षु विदिक्ष्वपि।।४८।।
इति ते कथितं दिव्यं सिद्ध मन्त्रौघ पंजर।
सर्व सिद्धिकरं सद्यः श्रीकीर्त्ति विजयप्रद।।४९।।
य इदं धारयेन्नित्यं श्रद्धया शृणुयादपि।
देवासुर मनुष्येभ्यो न भयं तस्य जायते।।५०।।
इदं भूर्जे लिपिं कृत्वा वाहौ कण्ठे च मूर्द्धनि।
धारयेद् परया भक्त्या तस्य किं किं न सिद्धति।।५१।।
अव्याहत बलैश्वर्य कवचं सर्वतोधिकं।
नानेन सदृशं किंचित् ममर्थमिह विद्यते।।५२।।
ज्ञात्वेदं कवचं दिव्यं गुरुप्राप्य मनुं जपेत्।
पुरश्चर्य्यां विना तस्य मन्त्र सिद्धिर्भवेद् ध्रुवम्।।५३।।

इति श्रीब्रह्मसंहितायां त्रैलोक्य सम्मोहन
गोपालमन्त्रात्मकं कवचं सम्पूर्णम्।

सनत्कुमार तन्त्रोक्त

श्रीगोपाल मंत्र व्याख्या

(षष्ठपटल)

।। श्रीकृष्णाय नमः ।।

कृष्णाय पदमाभाष्य गोविन्दाय व्याख्या ततः परं।
गोपीजन पदस्यान्ते वल्लभाय यथा विधिः।।१।।
कामबीजादिराख्यातो मनुरष्टादशाक्षरः।
अष्टार्णश्च, दशार्णश्च उक्तो मन्त्रो यथा विधि।।२।।
शक्ति श्रीं पूर्वकोऽष्टादशार्णो विंशति वर्णकः।
स्मर कृष्णाय ठद्वन्द्व षडर्णमनुरीरितः।।३।।
प्रणवं हृदयं कृष्णं ऐं तमुक्त्वा ततः परं।
तादृशं देवकी पुत्रं हुं फट् स्वाहा समन्वितं।।४।।
षोडशाक्षर मन्त्रोयं गोविन्दस्य समीरितः।
श्रीमन्मुकुन्द चरणं सदेति शरणं ततः।।५।।
अहं प्रपद्य इत्युक्तो मुकुन्दाष्टादशाक्षरः।
पंचान्तको धरा संस्थो मनुर्विदुविभूषितः।।६।।
पिंडबीजमिति प्रोक्तं सर्वसिद्धिप्रदायकं।
पिंडं रतिपतेर्बीजं नमो भगवते ततः।।७।।

नन्दपुत्राय, बालादि वपुषे श्यामलाय च।
गोपीजन पदस्यान्ते वल्लभाय दृढा विधिः।।८।।
अनुष्टुप् समाख्यातो गोपालस्य जगत्पतेः।
गोपालायाग्नि जायान्त षडक्षर उदाहृत।।९।।
कृष्णगोविन्दकौ तौ सप्तवर्णो मनुर्मतः।
श्रीशक्तिमारः कृष्णाय मारः सप्ताक्षरो परः।।१०।।
क्लीं क्लौं क्लीं श्यामलांगाय नतिस्याद्दशवर्णकः।
चक्री वामन सर्गौ च मनुरेकार्णकं स्मृतः।।११।।
काममिन्द्रश्च माया च, ल च लांछित मस्तकः।
एक वर्णो मनु प्रोक्तः काम मन्त्र पुराहितः।।१२।।
तत्पूर्वं हृषीकेशं च चतुर्थ्यन्ते नमः पदं।
अष्टवर्णो मनुप्रोक्तः सर्वेषां हृदयस्थितः।।१३।।
ऐं वाग्भवं कामबीजं च कृष्णाय सुरसुन्दरी।
गोविन्दं युतं चैव रमाबीजमनन्तरम्।।१४।।
दशाक्षरं ततः पश्चात्सौबीजं तदनन्तरं।
द्वाविंशत्यक्षरो मन्त्रः सर्वसिद्धिप्रदायकः।।१५।।
काम मायां च लक्ष्मीश्च दशार्णं च ततः परं।
त्रयोदशार्ण मन्त्रं वै प्रोक्तं सर्वसमृद्धिदं।।१६।।
कामं लक्ष्मीं च मायां च जय कृष्ण पदद्वयं।
माया लक्ष्मी तथा कामं जयं देहि पदद्वयं।।१७।।
चतुर्विंशत्यक्षरात्मा स्वाहान्तो मनुरीरितः।
कामं पिण्डं तथा लक्ष्मीं स्वाहान्त प्रणवादिकः।।१८।।

इति सनत्कुमार तन्त्रे गोपालमंत्र व्याख्या षष्ठ पटलं सम्पूर्णम्।

गौतमीय तन्त्रोक्त

श्रीगोपाल कवचम्

।। श्रीगोपीजनवल्लभाय नमः ।।

ॐ अस्य श्रीगोपाल कवच मन्त्रस्य नारद ऋषिः गायत्रीछन्दः श्रीमदनगोपालो देवता। क्लीं बीजं कृष्णेति शक्तिः। श्रीगोपालस्य प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

।। ध्यानं ।।

वर्हापीडाभिरामं मृगमदतिलकं कुण्डलाक्रान्तगण्डं,
कंजाक्षं कम्बुकण्ठं स्मितसुभगमुखं स्वाधरे न्यस्तवेणुं।
श्यामं शान्तं त्रिभंगं रविकरवसनं भूषितं वैजयन्त्याद्,
वन्दे वृन्दावनस्थं युवति शतवृतं ब्रह्मगोपालरूपम्।।१।।

।।नारद उवाच।।

ॐ श्रीकृष्णाय शिरः पातु गोविन्दाय ललाटकम्।
गोपीजन वल्लभश्च चतुर्थ्यन्तस्तु पातु मां।।२।।
स्वाहा युक्त हरिः पातु लोचनं नवनीतभुक्।
श्रवणौ गोपिकानाथः करुणामृत विग्रहः।।३।।
नासिकां नीरदा भक्त भुवनानन्दमोहनः।
गण्डौ पुनातु वैकुण्ठः कामकेलि कलानिधिः।।४।।

ओष्ठाधरौ महात्मा च नन्दगोपसुतप्रभुः।
दन्तान्मुष्टिकजित्पायाद् आत्मारामः परात्परः।।५।।
मुखं मनोहरः कृष्णः पायात्कमल लोचनः।
कण्ठं राधापतिः श्रीमान् वृन्दावन विनोदकः।।६।।
भुजौ गजभ्रंशकश्च नर्त्तवेश महोदयः।
वक्षः पायान्महामल्लो, मल्लचाणूरनाशनः।।७।।
स्तनौ पायात्पूतनारिः रामरंगविशारदः।
मध्यं मनोभवानन्दः कालिन्दीकेलिलम्पटः।।८।।
गुह्यं पातु जगद्धाता जानुयुग्मं महाभुजः।
पादौ पुनातु दैत्यारिः सर्वदा भक्तवत्सलः।।९।।
शंखगदाधरः पातु गोपिका नयनोत्सवः।
अधः पातु महादेवो, नारायणो गुणार्णवः।।१०।।
उर्द्ध्वं गोवर्धनधरः पायात्सर्वभयापहः।।११।।
दिवायां चक्रपाणिश्च रात्रौ दानव मर्दनः।
जलस्थले चान्तरिक्षे नृसिंह पातु मां सदा।।१२।।
य इदं कवचं दिव्यं नारदेन प्रकीर्तितं।
पठेद्भक्ति परोभूत्वा सर्व सम्पत्प्रपद्यते।।१३।।
त्रिसन्ध्यं भक्तिभावेन कृष्णभक्तोप्यनन्यधीः।
पठित्वा लभते नित्यं यद्यद्वांछति चेतसा।।१४।।
जीवन्मुक्तो भवेत्सोपि दृढ़ाभक्ति हरौ भवेत्।
राजवल्लभतामेति सर्वानेव वशं नयेत्।।१५।।

इति श्रीगौतमीय तन्त्रे नारदप्रोक्तं श्रीगोपाल कवचं सम्पूर्णम्।

गौतमीय तन्त्रोक्त

श्रीगोपाल हृदय स्तोत्र

।। श्रीगणेशाय नमः ।।

ॐ अस्य श्रीगोपाल हृदय स्तोत्र मन्त्रस्य, भगवान संकर्षण ऋषिः। गायत्री छन्दः। ॐ बीजम्। लक्ष्मीः शक्तिः। गोपालः परमात्मा देवता प्रद्युम्नः कीलकम्। मनोवाक्कायार्जित सर्वपाप क्षयार्थे श्रीगोपाल प्रीत्यर्थे गोपाल हृदय स्तोत्र जपे विनियोगः।।

।। श्रीसंकर्षण उवाच ।।

ॐ ममाग्रतः सदा विष्णुः पृष्ठतश्चापि केशवः।
गोविन्दो दक्षिणे पार्श्वे वामे च मधुसूदनः।।१।।
उपरिष्ठात्तु वैकुण्ठो वाराहः पृथिवी तले।
अवान्तर दिशः पातु, तासु सर्वासु माधवः।।२।।
गच्छतस्तिष्ठतो वापि जाग्रतः स्वपतोऽपि वा।
नरसिंहकृतादगुप्तिर्वासुदेवमयोह्ययम्।।३।।
अव्यक्तं चैवास्ययोनिं, वदन्ति व्यक्तं देहं दीर्घमार्यगतिश्च।
वह्निर्वक्त्रं चन्द्र सूर्यो च नेत्रे दिशः श्रोत्रेघ्राणमायुश्चवायुम्।।४।।

वाचं वेदा हृदयं वै नभश्च पृथ्वी पादौ तारका रोमकूपाः।
अंगान्युपांगान्यधि देवता च विद्यादुपस्थं हि तथा समुद्रम्।।५।।
तं देवदेवं शरणं प्रजानां यज्ञात्मकं सर्वलोकप्रतिष्ठम्।
अजं वरेण्यं वरदं वरिष्ठं ब्रह्माणमीशं पुरुषं नमस्ते।।६।।
आद्यं पुरुषमीशानं पुरुहूतं पुरस्कृतम्।
ऋतेमेकाक्षरं ब्रह्म व्यक्ताव्यक्तं सनातनम्।।७।।
महाभारतमाख्यानं कुरुक्षेत्रं सरस्वतीम्।
केशवं गां च गंगां च कीर्त्तयन्मां प्रसीदति।।८।।
ॐ भूः पुरुषाय पुरुषरूपाय वासुदेवाय नमो नमः।
ॐ भुवः पुरुषाय पुरुषरूपाय वासुदेवाय नमो नमः।।
ॐ स्वः पुरुषाय पुरुषरूपाय वासुदेवाय नमो नमः।
ॐ महः पुरुषाय पुरुषरूपाय वासुदेवाय नमो नमः।।
ॐ जनः पुरुषाय पुरुषरूपाय वासुदेवाय नमो नमः।
ॐ तपः पुरुषाय पुरुषरूपाय वासुदेवाय नमो नमः।।
ॐ सत्यं पुरुषाय पुरुषरूपाय वासुदेवाय नमो नमः।
ॐ भुर्भुवः स्वः पुरुषाय पुरुषरूपाय वासुदेवाय नमो नमः।।
ॐ वासुदेवाय पुरुषाय पुरुषरूपाय वासुदेवाय नमो नमः।
ॐ संकर्षणाय पुरुषाय पुरुषरूपाय वासुदेवाय नमो नमः।।
ॐ प्रद्युम्नाय पुरुषाय पुरुषरूपाय वासुदेवाय नमो नमः।
ॐ अनिरुद्धाय पुरुषाय पुरुषरूपाय वासुदेवाय नमो नमः।।
ॐ हयग्रीवाय पुरुषाय पुरुषरूपाय वासुदेवाय नमो नमः।
ॐ भवोद्भवाय पुरुषाय पुरुषरूपाय वासुदेवाय नमो नमः।।

ॐ केशवाय पुरुषाय पुरुषरूपाय वासुदेवाय नमो नमः।
ॐ नारायणाय पुरुषाय पुरुषरूपाय वासुदेवाय नमो नमः।।
ॐ माधवाय पुरुषाय पुरुषरूपाय वासुदेवाय नमो नमः।
ॐ गोविन्दाय पुरुषाय पुरुषरूपाय वासुदेवाय नमो नमः।।
ॐ विष्णवे पुरुषाय पुरुषरूपाय वासुदेवाय नमो नमः।
ॐ मधुसूदनाय पुरुषाय पुरुषरूपाय वासुदेवाय नमो नमः।।
ॐ वैकुण्ठाय पुरुषाय पुरुषरूपाय वासुदेवाय नमो नमः।
ॐ अच्युताय पुरुषाय पुरुषरूपाय वासुदेवाय नमो नमः।।
ॐ त्रिविक्रमाय पुरुषाय पुरुषरूपाय वासुदेवाय नमो नमः।
ॐ वामनाय पुरुषाय पुरुषरूपाय वासुदेवाय नमो नमः।।
ॐ श्रीधराय पुरुषाय पुरुषरूपाय वासुदेवाय नमो नमः।
ॐ हृषीकेशाय पुरुषाय पुरुषरूपाय वासुदेवाय नमो नमः।।
ॐ पद्मनाभाय पुरुषाय पुरुषरूपाय वासुदेवाय नमो नमः।
ॐ मुकुन्दाय पुरुषाय पुरुषरूपाय वासुदेवाय नमो नमः।।
ॐ दामोदराय पुरुषाय पुरुषरूपाय वासुदेवाय नमो नमः।
ॐ सत्याय पुरुषाय पुरुषरूपाय वासुदेवाय नमो नमः।।
ॐ ईशानाय पुरुषाय पुरुषरूपाय वासुदेवाय नमो नमः।
ॐ तत्पुरुषाय पुरुषाय पुरुषरूपाय वासुदेवाय नमो नमः।।
ॐ पुरुषोत्तमाय पुरुषाय पुरुषरूपाय वासुदेवाय नमो नमः।
ॐ रामचन्द्राय पुरुषाय पुरुषरूपाय वासुदेवाय नमो नमः।।
ॐ नृसिंहाय पुरुषाय पुरुषरूपाय वासुदेवाय नमो नमः।
ॐ अनन्ताय पुरुषाय पुरुषरूपाय वासुदेवाय नमो नमः।।

ॐ विश्वरूपाय पुरुषाय
पुरुषरूपाय वासुदेवाय नमो नमः।
ॐ प्रणवेन्दुवह्निरादिसहस्रनेत्राय पुरुषाय
पुरुषरूपाय वासुदेवाय नमो नमः।।
ॐ गजेन्द्रमोक्षाय पुरुषाय
पुरुषरूपाय वासुदेवाय नमो नमः।
ॐ आगत प्रतिपालनाय पुरुषाय
पुरुषरूपाय वासुदेवाय नमो नमः।।

य इदं गोपाल हृदयमधीते स ब्रह्महत्यायाः पूतो भवति। सुरापानात् स्वर्णस्तेयात् वृषलीगमनात् परपति सम्भाषणात् असत्यात् अगम्यागमनात् अपेयपानात् अभक्ष्यभक्षणात् च पूतो भवति। अब्रह्मचारी ब्रह्मचारी भवति। सर्वेषु तीर्थेषु स्नातो भवति।। भगवान् महाविष्णुरित्याह।।

इति गौतमीय तन्त्रे श्रीगोपाल हृदय स्तोत्रं सम्पूर्णम्।

(दाक्षिणात्य नागरी पाण्डुलिपि वैकुण्ठवासी पं० राघवाचार्य स्वामीजी रंगजी मन्दिर के पाठ के प्राचीन ग्रन्थ संग्रह से मिलान कर संशोधित किया गया)

गौतमीय तन्त्रोक्त

दशाक्षर गोपाल मन्त्र विधि

।। श्रीगोपाल कृष्णाय नमः ।।

क्लींकारात् सृजद्विश्वमिति प्राहुः श्रुतेर्गिरः।
लकारात्पृथ्वी जाता ककाराज्जल सम्भवः।।१।।
ईकाराद्वह्निरित्यन्नो, नादाद्वायुरजायते।
विन्दोराकाश संभूतिरिरितिभूतात्मको मनः।।२।।
स्वाशब्देन च क्षेत्रज्ञः, हेतिचित्प्रकृतिः परा।
तयोरैक्यसमुद्भूतं मुखवेष्टन मन्त्रकं।।३।।
अतएव हि स्वः स्वनय स्वाहार्णकं भवेत्।
गोपीति प्रकृतिं विद्याज्जनस्तत्त्व समूहकं।।४।।
अनयोराश्रयोव्याप्त कारणत्वेन चेश्वरः।
सान्द्रानन्द परं ज्योतिर्वल्लभेन च कथ्यते।।५।।
त्रिपादूर्ध्वमुदैत्पुरुष इत्याहप्रथमागिरः।
बीजोच्चारण मात्रेण ब्रह्मभाव प्रजायते।।६।।
वल्लभेन तु शब्दाद्यं, स्वाहाया ज्ञानदाहनम्।
इति ते कथितं तत्वं, मुनेर्वै ब्रह्मसम्मतम्।।७।।

अथवा गोपी प्रकृतिर्जनस्तदंश मण्डलम्।
अनयोर्वल्लभः स्वामी, कृष्णारव्य ईश्वरः स्मृतः।।८।।
कार्य्याकारणयोरीशः श्रुतिभिस्तेन गीयते।
अनेक जन्मसिद्धानां, गोपीनां पतिरेव वा।।९।।
नन्दनन्दन इत्युक्तस्त्रैलोक्यानन्दवर्द्धनः।
चिन्तयेद्विरजो मन्त्री सर्वसम्पत्ति हेतवे।।१०।।
'कृष्' शब्दश्च सत्तार्थो 'णः' स्वानन्द स्वरूपकः।
सुखरूपो भवेदात्मा, भावानन्द मयत्वतः।।११।।
गो शब्देन ज्ञानमुक्तं, तेन विन्देत तत्प्रभुं।
गो शब्दाद्वेद इत्युक्त, स्तेन वा लभते विभुम्।।१२।।
एवं ते कथिता मन्त्र, वासना मुनि सत्तम।
वासुदेवः संकर्षणः प्रद्युम्नश्चानिरुद्धकः।।१३।।
नारायण इति ख्यातः मंत्र पंचात्मकः परम्।
अथरार्थस्तु कथितः, पद साम इतीरितः।।१४।।
तस्माद्विज्ञाय मन्त्रज्ञो, जपेत् श्रीकृष्णमन्त्रकं।।१५।।

इति गौतमीय तन्त्रे दशाक्षर गोपाल मन्त्र विधिः।

नारद पञ्चरात्रोक्त

श्रीगोपाल कवचम्

।। महादेव उवाच ।।

अथ वक्ष्यामि कवचं गोपालस्य जगद्गुरोः।
यस्य स्मरण मात्रेण जीवन्मुक्तो भवेन्नर।।१।।
शृणु देवि प्रवक्ष्यामि सावधानाऽवधारय।
नारदोऽस्य ऋषिर्देवि छन्दोऽनुष्टुबुदाहृतम्।।२।।
देवता बालकृष्णश्च चतुर्वर्ग प्रदायकः।
शिरो मे बालकृष्णश्च पातु नित्यं मम श्रुती।।३।।
नारायणः पातु कण्ठं गोपीवन्द्यः कपोलकम्।
नासिके मधुहा पातु चक्षुषी नन्दनन्दनः।।४।।
जनार्दनः पातुदन्तानधरंमाधवस्तथा।
ऊर्ध्वोष्ठं पातु वाराहश्चिबुकं केशिसूदनः।।५।।
हृदयं गोपिकानाथो नाभिं सेतुप्रदः सदा।
हस्तौ गोवर्धनधरः पादौ पीताम्बरोऽवतु।।६।।
करांगुलीः श्रीधरो मे पादांगुल्यः कृपामयः।
लिंगं पातु गदापाणिर्बालक्रीडा मनोरमः।।७।।
जगन्नाथः पातु पूर्वं श्रीरामोऽवतुपश्चिमम्।
उत्तरं कैटभारिश्च दक्षिणं हनुमत्प्रभुः।।८।।

आग्नेय्यां पातु गोविन्दो नैर्ऋत्यां पातु केशवः।
वायव्यां पातु दैत्यारिरैशान्यां गोपनन्दनः।।९।।
ऊद्र्ध्वं पातु प्रलम्बारिरधः कैटभमर्दनः।
शयानं पातु पूतात्मा गतौ पातु श्रियः पतिः।।१०।।
शेषः पातु निरालम्बे जाग्रद्भावे ह्यपांपतिः।
भोजने केशिहा पातु कृष्णः सर्वांग सन्धिषु।।११।।
गणनासु निशानाथो दिवानाथो दिनक्षये।
इति ते कथितं दिव्यं कवचं परमाद्भुतम्।।१२।।
यः पठेन्नित्यमेवेदं कवचं प्रयतो नरः।
तस्याशु विपदो देवि नश्यंति रिपु संघतः।।१३।।
अन्ते गोपाल चरणं प्राप्नोति परमेश्वरि।
त्रिसन्ध्यमेकसन्ध्यं वा यः पठेच्छृणुयादपि।।१४।।
तं सर्वदा रमानाथः परिपाति चतुर्भुजः।
अज्ञात्वा कवचं देवि गोपालं पूजयेद्यदि।।१५।।
सर्वं तस्य वृथादेवि जपहोमार्चनादिकम्।
स शस्त्रघातं सम्प्राप्य मृत्युमेति न संशयः।।१६।।

इति श्रीनारदपंचरात्रे ज्ञानामृतसारे चतुर्थरात्रे
श्रीगोपाल कवचं समाप्तम्।

नारद पञ्चरात्रोक्त

श्रीगोपाल स्तवराज

।। श्रीमद्गोपीजनवल्लभाय नमः।।

ॐ अस्य श्रीगोपालस्तवराजस्तोत्रमन्त्रस्य श्रीनारद ऋषिः, अनुष्टुप छन्दः, श्रीकृष्णः परमात्मा देवता श्रीकृष्ण प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

।। अथ ध्यानम्।।

सजलजलदनीलं दर्शितोदारशीलं।
करतलधृतशैलं वेणुवाद्यैरसालम्।।
ब्रजजनकुलपालं कामिनीकेलिलोलं।
तरुणतुलसिमालं नौमि गोपालबालम्।।१।।

।। नारद उवाच।।

नवीननीरदश्यामं नीलेन्दीवरलोचनम्।
वल्लवीनन्दनं वंदे कृष्णं गोपालरूपिणम्।।२।।
स्फुरद्बर्हदलोद्बद्ध नील कुञ्चित कुन्तलम्।
कदम्बकुसुमोद्भासि वनमालाविभूषितम्।।३।।

गण्डमण्डलसंसर्गि चलत्कांचनकुण्डलम्।
स्थूलमुक्ताफलोदार हारद्योतितवक्षसम्।।४।।
हेमांगदतुलाकोटि किरीटोज्ज्वलविग्रहम्।
मंदमारुतसंक्षोभिचलिताम्बरसंचयम्।।५।।
रुचिरौष्ठपुटन्यस्तवंशीमधुरनिस्वनैः।
लसद्गोपालिकाचेतोमोहयन्तं मुहुर्मुहुः।।६।।
वल्लवीवदनाम्भोजमधुपानमधुव्रतम्।
क्षोभयन्तं मनस्तासां संस्मेरापांगवीक्षणैः।।७।।
यौवनोद्भिन्नदेहाभिः संसक्ताभिः परस्परम्।
विचित्राम्बरभूषाभिर्गोपनारीभिरावृतम्।।८।।
प्रभिन्नाञ्जनकालिन्दी-जलकेलिकलोत्सुकम्।
योधयन्तं क्वचिद्गोपान् व्याहरन्तं गवां गणम्।।९।।
कालिन्दीजलसंसर्गिशीतलानिलकम्पिते।
कदम्बपादपच्छाये स्थितं वृन्दावने क्वचित्।।१०।।
रत्नभूधरसंलग्न रत्नासन परिग्रहम्।
कल्पपादप मध्यस्थं हेम मण्डपिकागतम्।।११।।
बसन्तकुसुमामोद सुरभीकृत दिङ्मुखे।
गोवर्धनगिरौ रम्ये स्थितं रासरसोत्सुकम्।।१२।।

सव्य हस्ततले न्यस्त गिरिवर्याति पत्रकम्।
खण्डिता खण्डितोन्मुक्त मुक्तासार घनाघनम्।।१३।।
वेणुवाद्यमहोल्लासकृतहुंकारनिःस्वनैः।
सवत्सैरुन्मुखैः शश्वद्गोकुलैरभिवीक्षितम्।।१४।।
कृष्णमेवानुगायद्भिस्तच्चेष्टावशवर्त्तिभिः।
दण्डपाशोद्यतकरैर्गोपालैरूपशोभितम्।।१५।।
नारदाद्यै मुनिश्रेष्ठैर्वेदवेदांग पारगैः।
प्रीतिसुस्निग्धया वाचा स्तूयमानं परात्परम्।।१६।।
य एवं चिन्तयेद्देवं भक्त्या संस्तोति मानवः।
त्रिसन्ध्यं तस्य तुष्टोऽसौ ददाति वरमीप्सितम्।।१७।।
राजवल्लभतामेति भवेत् सर्वजनप्रियः।
अचलां श्रियमाप्नोति स वाग्मी जायते ध्रुवम्।।१८।।

इति श्रीनारद पंचरात्रे ज्ञानामृतसारे चतुर्थ रात्रे
श्रीगोपाल स्तवराजः सम्पूर्णम्।

(गौतमीय तन्त्र की नागरी लिपि में लिखित कुछ प्रतियों में यह पुष्पिका पायी जाती है। संस्थान में संरक्षित गौतमीय तन्त्र की प्रति में यह नहीं है। नारद पंचरात्र में उपलब्ध है)

सम्मोहन तन्त्रोक्त

सिद्ध श्रीगोपाल कवचम्

।।श्रीगणेशाय नमः।। श्रीगोपालकृष्णाय नमः।।

भगवन्तं सुखासीनं देवदेवं श्रियः पतिम्।
प्रणम्य परिपप्रच्छन्नारदो मुनिसत्तमः।।१।।
भगवन्सर्वमन्त्राणां सेवितानां सुरर्षिभिः।
सचिरेणापिकालेन कथं न फलदो मनुः।।२।।
दशलक्ष जपन्तश्च पंच लक्षं तथा परे।
सप्तलक्षं, त्रिलक्षं च लक्षमेकं मनोस्तथा।।३।।
जाप्यमेवं निगदितं कुर्वन्न फलभाक्कथम्।
साधको विधिवद्धोता पूजकश्च यथा विधिः।।४।।
एतत्सर्वं हृषिकेश कथयस्व मयि प्रभो।
त्वदन्यो नास्ति मे देव शरण्यः शरणम् सतां।।५।।
भक्तोहं त्वयिचेदस्मि तत्त्वं कथय मे प्रभो।
त्वमेव च पूजितोसि त्वत्तो नाप्यन्यईश्वरः।।६।।

।। श्रीभगवान उवाच।।

जानीहि कवचं पुत्र सर्वमन्त्रेषु गोपितं।
तदेव जीवनं सम्यक् साधकेभ्योपि साधकः।।७।।

जीवनेन विना मन्त्रः फलदो नहि कश्चनः।
न जीवितं विना कश्चित् साधकेभ्योपि साधकः।।८।।
वीर्यवान सर्वतन्त्रेषु वैष्णवो मन्त्र उत्तमः।
विशेषतद्विजानीहि श्रीगोपालमनुं वरं।।६।।
सम्मोहन कवचस्तु तत्रापि च विशेषतः।
न सोऽपि कश्चिद् फलदः कवचेन विना मुने।।१०।।
जीवनेन विना देही यथा न फल भाक्क्वचित्।
कवचेन विना मंत्रस्तथैव किल पुत्रकः।।११।।
शृणु नारद भक्तोऽसि मयित्वमिति निश्चितम्।
बाहुल्यात्कथयाम्यद्य ब्रह्मणापि यद्श्रुतम् ।।१२।।
शृणुष्वावहितो विप्र गोपाल कवचं शुभम्।
अनेक तपसा लक्ष्म्याश्रुतंमंत्रो महार्णवे।।१३।।

ॐ क्लीं श्रीं श्रीगोपालकवचस्य नारद ऋषिः। विराट्छन्दः।
श्रीगोपालोदेवता दुर्गा शक्तिः। क्लीं कीलकं, धमार्थकाममोक्षार्थे
जपे विनियोगः।।

श्रीकृष्णो मे शीर्षमव्यात् पीतवासा जनार्दनः।
चलद्गोचारणः श्रीमान् मां रक्षत्वम्बुजेक्षणः।।१४।।
गोपालवेषधाराय वासुदेवाय फट् नमः।
श्रीकृष्णो मे मुखं पातु नृत्यत्फणिफणाम्बुजैः।।१५।।
पातुचक्षुयुगं[1] श्रीमान् मकरध्वजसेवितः।
क्लीं नमः कामदेवाय सर्वजनप्रियाय,
सर्वजन सम्मोहनाय ज्वल, ज्वल, प्रज्वल, प्रज्वल,
सर्वजनस्य ह्रदयं मम वशं कुरु कुरु नमः।।१६।।

---

१. बाहुयुगं, पाठभेदः

वक्षः पातु हृषीकेशः श्रीपतिर्कण्ठदेशकं।
जनान्वशय, वशय, श्रीमन्मदनेन निषेवितः।।१७।।
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं कृष्णाय गोविन्दाय नमः।
श्रीकृष्णो मे चरणौ पातु सर्वैश्वर्य प्रदायकः।।१८।।
क्लीं कृष्णो मे पृष्ठं पातु महाभागो दशेन्द्रियं।
सर्व देहं देवदेवः पद्मनाभः पुरातनः।।१६।।
ॐ क्लीं ह्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं क्लीं ह्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं क्लीं।
सूर्य मण्डल मध्यस्थः श्रीकृष्णोव्यन्महामतिः।।२०।।
शीर्षादि चरणान्तं मे चरणादि शिरोवधिः।
ऐं क्लीं कृष्णाय, ह्रीं गोविन्दाय, श्रींगोपीजनवल्लभाय नमः।।२१।।
देव देव सदा पातु धर्मं मे धार्मिकप्रियः।
अर्थं मे श्रीपतिः पातु मोक्षं पातु जनार्दनः।।२२।।
सर्वत्रं च सदा पातु देवकीनन्दनः पथिः।
भयो ह्रीं मां भयात्पातु दुःखात् दुःखविनाशकः।।२३।।
ॐ नमो भगवते रुक्मिणीवल्लभाय नमः।
सर्वसम्पद्प्रदः पातुः सम्पदं मे जगत्पतिः।।२४।।
सदा रक्षतु गोविन्दः पुत्रादीनापि सर्वदाः।
ॐ नमो गोपालाय क्लीं गोकुलनाथाय स्वाहा।
अव्यादजः सर्वदेशे सर्वदिक्षुः जनार्दनः।।२५।।
सर्वकालेषु सर्वत्रः सर्वरूप महेश्वरः।
ईश्वरः सर्वकृत्पातु कर्त्ता हर्त्ता स्वयं प्रभुः।।२६।।
सर्वत्र रक्षतु भयात्[1] कामरूपधरो हरिः।
गुरुः परम पूर्वश्च पर पूर्व परात्परः।।२७।।

---

१. सर्वशत्रुभयात्यातु, पाठभेदः

विघ्नेशो भास्करो दुर्गा शिवः पातु सनातनं।
दाम सुदामो वसुदामा किंकिण्यां सह पातु मां।।२८।।
रुक्मिणी सत्यभामा च नाग्नजिति सुनन्दया।
मित्रविन्दा सुलक्ष्मणा जाम्बवती सुशीलया।।२६।।
वसुदेवो देवकी च नन्दगोप यशोदया।
बलभद्रः सुभद्रा च गोपगोपी तथाऽवतु।।३०।।
सर्वदिक्षु दलोपेता पूजिता पूजयंतु ता।।
मन्दार सन्तानक पारिजात कल्पद्रुमाः श्रीहरिचन्दनश्च।
इन्द्रो हुताशो यम नैऋतेश्च यादःपतिर्वायु धनेश्वरश्च।।३१।।
नागाधिपश्चतुर्वक्त्रः सदा पातु प्रसन्नधी।
वज्रशक्तिः दण्ड खड्ग पाशांकुश त्रिशूलकं।
गदापद्मं तथा कृष्णो वासुदेवसदाऽवतु
नारायणो देवकीयो यदुश्रेष्ठोऽथवात्मजः।।३२।।
[1]मुरारिर्भारहारी च धर्मसंस्थापकोऽवतु।
पूजिताः पूजयन्त्येते साधकाः पुरुषोत्तमम्।।३३।।
य इदं कवचं वेत्ति तं नमस्यन्ति देवता।
तं दृष्ट्वा हिंसकाः सर्वे दिशोधावन्ति सत्वरं।।३४।।
तर्पिता पितरस्तेन यः शृणोति सुधामयं।
पूजिता देवतास्तेन भवेयुर्वरदाः सदा।।३५।।
सिद्ध चारण गन्धर्वा नमन्ति तमहर्निशं।
पूजयन्ति सुराध्यक्षं जीवितेन सुभक्तितः।।३६।।
कवचं हृदये यस्य पठन् प्राप्नोति यत्फलम्।
तच्छृणुष्व महाभाग भक्तोऽसि यदि मे द्विज।।३७।।

१. सुरारि

पूजाफलमवाप्नोति वेदवेदांग पारगः।
स वेत्ति सर्वशास्त्रार्थं तत्वज्ञः सर्वसाधकः।।३८।।
लक्ष्मीस्तन्मन्दिरे याति[1] यथा मयि तथा मुने।
तद्दृष्टिपातमात्रेण वश्यास्युः सर्वयोषिताः।।३६।।
धारयित्वा करे चैनं लभते वांछितं फलम्।
पठनात्सर्व पापेभ्यो मुच्यते नात्र संशयः।।४०।।
शतमष्टोत्तरं जप्त्वा काम्यादीन्यपि[2] साधयेत्।
मारणोच्चाटनद्वेषां व्युत्क्रमेण पठेन्नरः।।४१।।
जले सूर्यमुप[3]तिष्ठन् पठन्नष्टोत्तरं शतं।
वशं नयति राजानो मयि प्राणप्रहारकम्[4]।।४२।।
पुनाति स पुमान् वश्या सप्तसप्तपरावरान्।
दर्शनाद्देवतास्याशु मुच्यते पापकृन्नरः।।४३।।
मन्त्रस्य पठनाद्देवाः फलभागी न संशयः।
हविष्याशी जपेन्नित्यं मन्त्रं कवच मे वचः।।४४।।
गुरुपाद प्रसादेन यो वेत्ति कवचं भुवि।
न दद्यात् पर शिष्येभ्यो भक्तिहीने विशेषतः।।४५।।
मूर्खेभ्यो कुलहीनेभ्यो निर्दयेभ्योऽदयान्वितः।
यो मोहात्प्रदातेभ्यः स तु पापैर्प्रलिप्यते।।४६।।
सुकृतं तस्य तत्सर्वं गृह्णाति च न संशयः।
कदाचिदपि मोहेन पर शिष्यं न बोधयेत्।।४७।।
तस्मात् सर्व प्रयत्नेन न देयं यस्य कस्यचित्।
य श्राद्धे श्रावयेद्वापि पितृणां मुक्तिकारकं।।४८।।

१. भाति २. काम्यादीनां तु
३. मुखे ४. प्रवाहकं, पाठभेदाः

यः इदं कवचं वेत्ति भक्तिनम्र पठेन्नरः[1]।
यत्र कुत्र मृतोवापि मुक्तिभागी न संशयः।।४६।।
संक्षेपात्फलमेतस्य कथितम् मुनि सत्तमः।
विस्तरेण फलं वक्तुं न शक्नोमि कदाचन।।५०।।
त्वयापि न प्रकाश्योऽयं कदाचिदपि भूतले।
सत्यं सत्यं पुनः सत्यं मयोक्तं मुनि सत्तमः।।५१।।

।।श्रीश्रीगोपीजनवल्लभाय नमः।।

इति सम्मोहन तन्त्रे सिद्ध श्रीगोपालकवचं सम्पूर्णम्।

---

१. भवेन्नरः, पाठभेदः

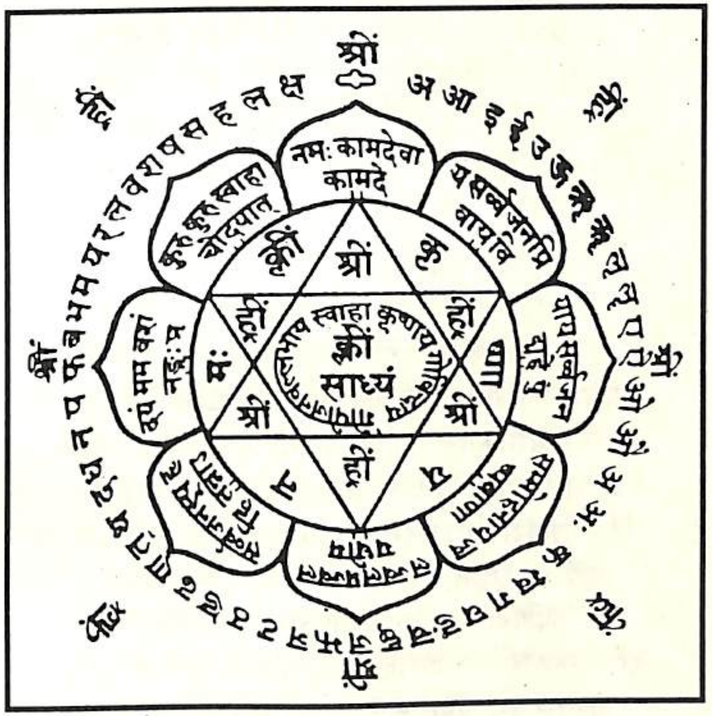

श्री गोपाल यन्त्र

सम्मोहन तन्त्रोक्त

श्रीगोपालस्तवराज

।।श्रीगोपालाय नमः।।

।। ईश्वर उवाच।।

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि रहस्यं भुवनेश्वरि।
तवैव पौरुषं रूपं गोपिका नयनामृतम्।।१।।
सदानिषेवितरागादभवद्विरहभीरुणा।
सत्यभामा प्रधानादि मायामूर्त्तिभिरष्टभिः।।२।।
ख्यातं मदनगोपाल संज्ञया भुवनत्रये।
ध्यानं तस्य प्रवक्ष्यामि सर्वपापप्रणाशनम्।।३।।
सर्वरोगप्रशमनं सत्पुत्राप्ति कारणम्।
सर्व सम्मोहनं, सर्वसम्पत्करमनुत्तमम्।।४।।
अणिमादिगुणैश्वर्य परमायुः प्रवर्द्धनम्।
सौभाग्यदायकं स्त्रीणां, नृणां चैव विशेषतः।।५।।
दासास्तस्य नृपाः सर्वे दास्यो मृगविलोचनाः।
बहुनात्र किमुक्तेन ध्यानेनानेन भामिनी।।६।।
यद्यदिच्छति तत्सर्वं नरः प्राप्नोत्यसंशयः।
श्रीमद्वालार्क संकाशं पद्मरागारुणप्रभं।।७।।

बन्धूक बंधुरालोक संध्यारागोपमद्युतिं।
मुकुटानेकमाणिक्यप्रभापल्लविताम्बरम्।।८।।
किरीटोपान्त विन्यस्त बर्हिबर्हावतंसकं।
कस्तूरी तिलकाक्रान्त कमनीयालकस्थलं।।९।।
स्मरकोदण्डसौभाग्य सचित्र कुटिलभ्रुवं।
करुणारससम्पूर्णं क़र्णआयत लोचनम्।।१०।।
निस्पृह स्थूलमाणिक्य चारुमौक्तिक कुण्डलं।
कर्णावलम्बिं सौवर्णं कर्णिकारावतंसकं।।११।।
स्मेर गंडस्थलं श्रीमन्नुन्नतोन्नत नासिकं।
दन्तांशुकुसुमाश्लिष्ट कोमलाधरपल्लवं।।१२।।
असाधारण सौभाग्य चिवुकोद्देश शोभितं।
शशांकविम्बाहंकार श्लाघा भंग कराननं।।१३।।
अनर्घ्य रत्नग्रैवेय विलसत्कम्बु कन्धरः।
सौरभ्य लोल रोलम्वै शुभै मन्दारदामभिः।।१४।।
उदंशु मौक्तिकैर्हारैवैजयन्त्या च मालया।
श्रीवत्स कौस्तुभाभ्यां च परिष्कृत भुजान्तरम्।।१५।।
रत्नकंकणकेयूरैर्भूषितैर्दशभिर्भुजैः।
चक्रं पुष्पं शरं पद्मं सृणिं शंखेक्षु कार्मुकं।।१६।।
गदां पाशं च मुरलीं बिभ्राणं मोहनाकृतिम्।
निम्ननाभि रोमराजि विलसत्पल्लवोदरम्।।१७।।
विशंकट कटिदेशं वाचाल मणिमेखलां।
स्फुरत्सौदामिनीछाया, दायाद् कनकाम्बरम्।।१८।।
सिन्दूरी चेन्द्रवेतण्ड शुण्डा शुंड बंधुरम्।
मणिदर्पणपर्याय जानुद्वन्द्वं मनोहरम्।।१९।।

स्मरकाहलसच्छाया जंघायुग समुज्ज्वलं।
प्रपदा श्रीपराभूत कमठाकृति सौष्ठवं।।२०।।
मणिमंजीर किरण किंजल्कित पदाम्बुजं।
शाणोल्लीट मणिश्रेणि रम्याङ्घ्रिनखमण्डलम्।।२१।।
आपादकण्ठमामुक्तभूषाशत मनोहरम्।
कल्पकोटिकहारामे आश्रिते रत्नमण्डपे।।२२।।
चिन्तामणि महापीठे मध्ये हेमसरोरुहे।
कर्णिकोपरि संदीप्त श्रीमत्पद्मासने शुभे।।२३।।
तिष्ठन्तं देवदेवेशं त्रिभंगी ललिताकृतिः।
वामांशोपरि विन्यस्त व्यलोलमणि कुण्डलम्।।२४।।
उदंचित भ्रुवं किंचित् कुंचिताधर पल्लवं।
गानव्याजामृतरसव्यंजितश्रुतिवैभवम्।।२५।।
तत्तत्स्वरानुगुण्यैन वेणुरन्ध्राननुक्रमात्।
आवृण्यन्तं विवृण्यन्तं मुहुरंगुलिपल्लवैः।।२६।।
तप्त हेमरुचालक्ष्या भुवा मरकतश्रियाः।
उपास्यमानं देवीभ्यामुभयो पार्श्वयोः सदा।।२७।।
रुक्मिणी सत्यभामादि स्त्रीभिरष्टभिरावृतां।
षोडशोस्त्री सहस्रैश्च समतादुपसेवितम्।।२८।।
देवकी वसुदेवाभ्यां प्रद्युम्नादि कुमारकैः।
भातृभिर्वलभद्राद्यैरक्रूराद्यैश्च बन्धुभिः।।२६।।
यशोदानन्दगोपाभ्यां गोपैर्वालसखैस्सहः।
गोवृन्दैरुन्मुखश्रोत्रैः सुमुखार्पितदृष्टिभिः।।३०।।
अम्बरीषादि भूपालैर्वसिष्ठसनकादिभिः।।३१।।
उपास्यमानममितः परमानन्द निर्भरैः।
नादामृत रसास्वाद निस्यन्द निखिलेन्द्रियैः।।३२।।

उपास्यमानममितः सदारौर्द्रि विषद्गनैः।
चित्रन्यस्तमिवाशेषमातन्वनमिदं जगत्।।३३।।
ध्यायन्मदनगोपालमन्तः शुचिरलंकृतम्।
सर्वान् कामानवाप्नोति दुर्लभानपि यत्नतः।।३४।।
स नरः श्रेयमाप्नोति दुर्लभां च प्रयत्नतः।
प्राप्नोत्यखण्डमक्षयं देहान्ते वैष्णवं पदं।।३५।।
चक्राब्ज, पाश, शर सायक वंशचापं।
विभ्राणमष्ट भुजमष्ट, फलप्रसूतिम्।
ध्यायेद् हरिं मदनगोपविलासवेशं।
वन्दे कृष्णं सर्वलोकैकनाथं।।३६।।

।। हरि ॐ तत्सत्।।

इति सम्मोहन तन्त्रे पार्वती परमेश्वर संवादे
श्रीगोपाल स्तवराज समाप्तम्।

श्रीगोपालसहस्रनाम शाप विमोचन

(श्रीगोपाल सहस्रनाम स्तोत्र की शाप विमोचन विधि यद्यपि प्राचीन प्रतियों में दृष्टिगोचर नहीं होती है; तथापि कई प्रतियों में प्राप्य है। प्रकाशित कई प्रामाणिक प्रतियों में भी उपलब्ध है। नित्यधाम प्राप्त श्रीमत् स्वामी व्रजविदेही धनञ्जयदासजी महाराज वेदान्तशास्त्री, संस्थापक नया काठियाबाबा आश्रम, गुरुकुल रोड, वृन्दावन, ने इस शाप विमोचन की आवश्यकता तथा इसे पाठ का अंग माना है एवं इसके बिना पाठ सिद्ध नहीं होता है, ऐसा निर्देश दिया है। उन्होंने श्रीनिम्बार्क आश्रम, ऊखामठ, बर्द्धमान (प. बंगाल) की एक प्रति देकर इसकी नित्यता का उपदेश दिया। अतः शाप विमोचन को यहां सम्मिलित किया जा रहा है।)

विधिः–

ॐ अस्य श्रीगोपाल सहस्रनाम शाप विमोचन महामन्त्रस्य वामदेव ऋषिः श्रीगोपालो देवता पंक्तिश्छन्दः सदाशिव वाक्य शाप विमुक्त्यर्थे जपे विनियोगः। ॐ वामदेवाय ऋषये नमः शिरसि। श्रीगोपाल देवतायै नमः मुखे। पंक्तिश्छन्दसे नमः गुह्ये। सदाशिव वाक्य शाप विमुक्तये नमः सर्वांगे। ॐ ऐं अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ क्लीं तर्जनीभ्यां नमः। ॐ ह्रीं मध्याभ्यां नमः। ॐ श्रीं अनामिकाभ्यां नमः। ॐ वामदेवाय कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ स्वाहा करतल कर पृष्ठाभ्यां नमः। ॐ ऐं हृदयाय

नमः। ॐ क्लीं शिरसे स्वाहा। ॐ ह्रीं शिखायै वौषट्। ॐ श्रीं कवचाय हुं। ॐ वामदेवाय नमः नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ स्वाहा सौं अस्त्राय फट्। ॐ भुर्भुव स्वरोम् (इति दिग्बन्धनम्)

ध्यानं–

ध्यायेद् देवं गुणातीतं पीत कौशेय वाससम्।
प्रसन्न चारु वदनं निर्गुणं श्रीपतिं प्रभुम्।।

मन्त्र–

ॐ ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं वामदेवाय नमः स्वाहा सौं।

(१०८ बार जाप के पश्चात् श्रीगोपाल सहस्रनाम का अंगन्यासादि पूर्वक पाठ करना विधेय है)

सम्मोहन तन्त्रोक्त

श्रीगोपालसहस्रनाम स्तोत्र

।। श्रीगोपालदेवाय नमः ।।

कैलाश शिखरे रम्ये गौरी पृच्छति शंकरम्।
ब्रह्माण्डाखिलनाथस्त्वं सृष्टिसंहारकारकः ।।
त्वमेव पूज्यसे लोकैर्ब्रह्माविष्णु सुरादिभिः।
नित्यं पठसि देवेश ! कस्य स्तोत्रं महेश्वर ।।
आश्चर्यमिदमत्यन्तं जायते मम शंकर।
तत्प्राणेश महाप्राज्ञ संशयं छिन्दि शंकर ।।

श्रीमहादेव उवाच

धन्यासि कृतपुण्याऽसि पार्वति प्राणवल्लभे।
रहस्याति रहस्यंच यत् पृच्छसि वरानने ।।
स्त्रीस्वभावान्महादेवि ! पुनस्त्वं परिपृच्छसि।
गोपनीयं गोपनीयं गोपनीयं प्रयत्नतः ।।
दत्ते च सिद्धिहानिः स्यात् तस्माद् यत्नेन गोपयेत्।
इदं रहस्यं परमं पुरुषार्थ प्रदायकम् ।।
धनरत्नौघ माणिक्य तुरंगम गजादिकम्।
ददाति स्मरणादेव महामोक्षप्रदायकम् ।।

तत्तेऽहं संप्रवक्ष्यामि शृणुष्वावहिता प्रिये।
योऽसौ निरंजनो देवश्चित्स्वरूपी जनार्दनः ।।
संसारसागरोत्तारकरणाय सदा नृणाम्।
श्रीरंगादिक[1] रूपेण त्रैलोक्यं व्याप्य तिष्ठति ।।
ततो लोका महामूढ़ा विष्णुभक्ति विवर्जिताः।
निश्चयं नाधिगच्छन्ति पुनर्नारायणो हरिः ।।
निरंजनो निराकारो भक्तानां प्रीतिकामदः।
वृन्दावनविहाराय गोपालं रूपमुद्वहन् ।।
मुरलीवादनाधारी राधायै प्रीतिमावहन्।
अंशांशेभ्यः समुन्मील्य पूर्णरूपकलायुतः ।।
श्रीकृष्णचन्द्रो भगवान् नन्द गोपवरोदितः।[2]
धरणीरूपिणी माता यशोदानन्ददायिनी ।।
द्वाभ्यां प्रयाचितो नाथो देवक्यां वसुदेवतः।
ब्रह्मणाभ्यार्थितो देवो देवैरपि सुरेश्वरि ।।
जातोऽवन्यां मुकुन्दोऽपि मुरली वेदरेचिका।
तया सार्द्धं वचः कृत्वा ततो जातो महीतले ।।
संसारसारसर्वस्वं श्यामलं महदुज्ज्वलम्।
एतज्ज्योतिरहं वेद्यं चिन्तयामि सनातनम् ।।
गौरतेजो विना यस्तु श्यामतेजः समर्च्चयेत्।
जपेद् वा ध्यायते वापि स भवेत पातकी शिवे ।।
स ब्रह्महा सुरापी च स्वर्णस्तेयी च पंचमः।
एतैर्दोषैविर्लिप्येत तेजोभेदान्महेश्वरि ।।

---

१. 'श्रीगंगाद्रव रूपेण' पाठभेदः

२. 'वरोद्यतः' पाठभेदः

तस्माज्ज्योतिरभूद् द्वेधा राधामाधव रूपकम्।
तस्मादिदं महादेवि ! गोपालेनैव भाषितम्।।
दुर्वाससो मुनेर्मोहे कार्त्तिक्यां रासमण्डले।
ततः पृष्टवती राधा सन्देहं भेदमात्मनः।।
निरंजनात्समुत्पन्नं मयाधीतं जगन्मयि।
श्रीकृष्णेन ततः प्रोक्तं राधायै नारदाय च।
ततो नारदतः सर्वे विरला वैष्णवास्तथा।
कलौ जानन्ति देवेशि, गोपनीयं प्रयत्नतः।।
शठाय कृपणायाथ दाम्भिकाय सुरेश्वरि।
ब्रह्महत्यामवाप्नोति तस्माद् यत्नेन गोपयेत्।।

ॐ अस्य श्रीगोपाल सहस्रनामस्तोत्रमन्त्रस्य। श्रीनारद ऋषिः। अनुष्टुप छन्दः। श्रीगोपालो देवता। कामोबीजम्। माया शक्तिः। चन्द्रः कीलकम्। श्रीकृष्णचन्द्र भक्तिरूप फल प्राप्तये श्रीगोपाल सहस्रनाम स्तोत्र जपे विनियोगः।

ॐ ऐं क्लीं बीजम्। श्रीं ह्रीं शक्तिः। श्रीवृन्दावन निवासः कीलकम्। श्रीराधाप्रियं परं ब्रह्मेति मन्त्रः। धर्मादि चतुर्विध पुरुषार्थ सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।।

ऋष्यादि न्यासः—

शिरसि ॐ नारद ऋषये नमः। मुखे ॐ अनुष्टुप छन्दसे नमः हृदये ॐ गोपाल देवतायै नमः। नाभौ क्लीं कीलकाय नमः। गुह्ये ह्रीं शक्तये नमः। पादयोः श्रींकीलकाय नमः। क्लीं कृष्णाय गोविन्दाय गोपीजनवल्लभाय स्वाहा। इति मूल मन्त्रः।

करन्यासः—

ॐ क्लां अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ क्लीं तर्जनीभ्यां नमः। ॐ क्लूं मध्यमाभ्यां नमः। ॐ क्लैं अनामिकाभ्यां नमः। ॐ क्लौं कनिष्ठकाभ्यां नमः। ॐ क्लः करतल करपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यासः—

ॐ क्लां हृदयाय नमः। ॐ क्लीं शिरसे स्वाहाः। ॐ क्लूं शिखायै वषट्। ॐ क्लैं कवचाय हुम्। ॐ क्लौं नेत्राभ्यां वौषट्, ॐ क्लः अस्त्राय फट्।

मूलमन्त्रन्यासः—

क्लीं अंगुष्ठाभ्यां नमः। कृष्णाय तर्जनीभ्यां नमः। गोविन्दाय मध्यमाभ्यां नमः। गोपीजन अनामिकाभ्यां नमः। वल्लभाय कनिष्ठिकाभ्यां नमः। स्वाहा करतल कर पृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यासः—

क्लीं हृदयाय नमः। कृष्णाय शिरसे स्वाहा। गोविन्दाय शिखायै वषट्। गोपीजन कवचाय हुम्। वल्लभाय नेत्राभ्यां वौषट्। स्वाहा अस्त्राय फट्।।

।। ध्यानम्।।

कस्तूरीतिलकं ललाटपटले वक्षःस्थले कौस्तुभं,
नासाग्रे वरमौक्तिकं[1] करतले वेणुः करे कंकणम्।
सर्वांगे हरिचन्दनं सुललितं कण्ठे च मुक्तावली,
गोपस्त्री परिवेष्टितो विजयते गोपाल चूड़ामणिः।।१।।

---

१. 'गजमौक्तिकं' पाठभेदः

फुल्लेन्दीवरकान्तिमिन्दुवदनं बर्हावतंसप्रियं,
श्रीवत्सांकमुदारकौस्तुभधरं पीताम्बरं सुन्दरम्।।
गोपीनां नयनोत्पलार्चिततनुं गो-गोप-संघावृतं।
गोविन्दं कलवेणुवादनपरं दिव्यांगभूषं भजे।।२।।

अथ श्रीगोपाल सहस्रनाम

(ॐ) क्लीं देवः कामदेवः कामबीज शिरोमणिः।
श्रीगोपालो महीपालः सर्ववेदांग[1] पारगः।।१।।
धरणीपालको धन्यः पुण्डरीकः सनातनः।
गोपतिर्भूपतिः शास्ता प्रहर्त्ता विश्वतोमुखः।।२।।
आदिकर्त्ता महाकर्त्ता महाकालः प्रतापवान्।
जगज्जीवो जगद्धाताजगद्भर्त्ता जगद्वसुः।।३।।
मत्स्योभीमः कुहूभर्त्ता हर्त्ता वाराह मूर्त्तिमान्।
नारायणो हृषीकेशो गोविन्दो गरुडध्वजः।।४।।
गोकुलेन्द्रो महीचन्द्रः शर्वरीप्रियकारकः।
कमलामुखलोलाक्षः पुण्डरीकः शुभावहः।।५।।
दुर्वासा कपिलो भौमः सिन्धुसागरसंगमः।
गोविन्दो गोपतिर्गोत्रः कालिन्दीप्रेमपूरकः।।६।।
गोपस्वामी[2] गोकुलेन्द्रो गोवर्धनवरप्रदः।
नन्दादि गोकुलत्राता[3] दाता दारिद्र्यभंजनः।।७।।
सर्वमंगलदाता च सर्व कामप्रदायकः।
आदिकर्त्ता महीभर्त्ता सर्वसागर सिन्धुजः।।८।।

१. 'वेद'
२. 'गोस्वामी' ३. 'गोकुलेन्द्रश्च', पाठभेदाः

गजगामी गजोद्धारीकामीकामकलानिधिः।
कलंकरहितश्चन्द्रो बिम्बास्योबिम्बसत्तमः।।६।।
मालाकारः कृपाकारः कोकिलास्वर भूषणः
रामो नीलाम्बरो देवो हली दुर्दममर्दनः[1]।।१०।।
सहस्राक्षपुरीभेत्ता महामारीविनाशनः।
शिवः शिवतमो भेत्ता बलाराति प्रपूजितः।।११।।
कुमारी वरदायी च वरेण्यो मीनकेतनः।
नरो नारायणो धीरो राधापतिरुदारधीः।।१२।।
श्रीपतिः श्रीनिधिः श्रीमान् मापतिः पतिराजहा।
वृन्दापतिः कुलग्रामी धामी ब्रह्म सनातनः।।१३।।
रेवतीरमणोरामः चञ्चलश्चारुलोचनः।
रामायणो[2] शरीरोऽयं रामी रामःश्रियःपतिः।।१४।।
शर्वरः शर्वरी सर्वः सर्वत्र शुभदायकः।
राधाराधयितो राधी राधाचित्त प्रमोदकः।।१५।।
राधारतिसुखोपेतो राधामोहन तत्परः।
राधावशीकरो राधा हृदयाम्भोजषट्पदः।।१६।।
राधालिंगन सम्मोहो राधानर्त्तन कौतुक।
राधासंजात संप्रीतो राधाकाम्यफलप्रदः।।१७।।
वृन्दापतिः कोकनिधिः कोकशोक विनाशनः।
चन्द्रापतिश्चन्द्रपतिश्चण्डकोदण्डभञ्जनः।।१८।।
रामो दाशरथी रामो भृगुवंशसमुद्भवः।
आत्मारामो जितक्रोधो मोहो मोहान्धभञ्जनः।।१९।।

१. दुर्दमः
२. रामायण, पाठभेदाः

वृषभानुर्भवो भावः[1] काश्यपिः करुणानिधिः।
कोलाहलो हली हाली हेली हलधरप्रियः।।२०।।
राधामुखाब्ज मार्त्तण्डो भास्करो रविजो विधुः।
विधिर्विधाता वरुणो वारुणो वारुणीप्रियः।।२१।।
रोहिणी हृदयानन्दी वसुदेवात्मजो बली।
नीलाम्बरो रोहिणेयो जरासन्धवधोऽमलः।।२२।।
नागोनवाम्भो विरहो[2] वीरहा वरदोवली।
गोपथो विजयी विद्वान् शिपिविष्ट सनातनः।।२३।।
परशुरामवचोग्राही वरग्राही शृगालहा।
दमघोषोपदेष्टा च रथग्राही सुदर्शनः।।२४।।
वीरपत्नीयशस्त्राता जराव्याधिविघातकः।
द्वारकावासतत्त्वज्ञो हुताशनवरप्रदः।।२५।।
यमुनावेगसंहारी नीलाम्बरधरः प्रभुः।
विभुः शरासनो धन्वी गणेशो गणनायकः।।२६।।
लक्ष्मणो लक्षणो लक्ष्यो रक्षोवंश विनाशनः।
वामनो वामनी भूतोऽवामनो वमनारुहः।।२७।।
यशोदानन्दनः कर्त्ता यमलार्जुनमुक्तिदः।
उलूखली महामानी[3] दामबद्धाह्वयी शमी।।२८।।
भक्तानुकारी भगवान् केशवोऽचलधारकः।
केशिहा मधुहा मोही वृषासुर विघातक।।२९।।
अघासुर विनाशी च पूतनामोक्षदायकः।
कुब्जा विनोदी भगवान् कंसमृत्युर्महामखी।।३०।।

---

१. भावी
२. विरुदो
३. मानो

अश्वमेधो वाजपेयो गोमेधो नरमेधवान्।
कन्दर्पकोटि लावण्यश्चन्द्र कोटि सुशीतलः।।३१।।
रविकोटि प्रतीकाशो वायुकोटि महाबलः।
ब्रह्मा ब्रह्माण्डकर्त्ता च कमलावांछितप्रदः।।३२।।
कमली कमलाक्षश्च कमलामुखलोलुपः।
कमलाव्रतधारी च कमलाभः[1] पुरन्दरः।।३३।।
सौभाग्याधिक चित्तोऽयं महामायी महोत्कटः।
तारकारिः सुरत्राता मारीचक्षोभकारकः।।३४।।
विश्वामित्र प्रियोदान्तो रामो राजीवलोचनः।
लंकाधिपकुलध्वंसी विभीषणवरप्रदः।।३५।।
सीतानन्दकरो रामो वीरो वारिधिबन्धनः।
खरदूषणसंहारी साकेतपुरवासनः।।३६।।
चन्द्रावलीपतिः कूलः केशीकंसवधोऽमलः[2]।
माधवो मधुहा माध्वी माध्वीक माधवी मधुः[3]।।३७।।
मुञ्जाटवीगाहमानो धेनुकारिर्धरात्मजः।
वंशीवटविहारी च गोवर्धनवनाश्रयः।।३८।।
तथा तालवनोद्देशी भाण्डीरवनशंखहा।
तृणावर्त-कथाकारी वृषभानुसुतापतिः।।३९।।
राधा प्राणसमोराधा वदनाब्ज मधुव्रतः।
गोपीरंजन दैवज्ञो लीलाकमल पूजितः।।४०।।
क्रीड़ाकमलसन्दोहो गोपिका प्रीतिरंजनः।
रंजको रंजनो रंगो रंगी रंग महीरुहः।।४१।।

---

१. कमलाक्षः
२. ऽमरः
३. विभुः

कामः कामारि भक्तोऽयं पुराणपुरुषः कविः।
नारदो देवलोभीमोबालो बालमुखांबुजः।।४२।।
अम्बुजो ब्रह्मसाक्षी च योगीदत्त वरोमुनिः।
ऋषभः पर्वतोग्रामो नदी-पवन-वल्लभः।।४३।।
पद्मनाभः सुरज्येष्ठो ब्रह्मारुद्रोऽहि भूषितः।
गणानांत्राणकर्त्ता च गणेशोग्रहिलो ग्रही।।४४।।
गणाश्रयो गणाध्यक्षः क्रोड़ीकृत जगत्त्रयः।
यादवेन्द्रो द्वारकेन्द्रो मथुरावल्लभो धुरी।।४५।।
भ्रमरः कुन्तलीकुन्ती सुतरक्षी महामखी।
यमुनावरदाता च काश्यपस्य[1] वरप्रदः।।४६।।
शंखचूड़वधोद्दामी गोपीरक्षण तत्परः।
पाञ्चजन्यकरो रामी त्रिरामी वनजोजयः।।४७।।
फाल्गुनः फाल्गुनसखो विराधवधकारकः।
रुक्मिणीप्राणनाथश्च सत्यभामाप्रियंकरः।।४८।।
कल्पवृक्षो महावृक्षो दानवृक्षो महाफलः।
अंकुशो भूसुरो भामो भामको भ्रामको हरिः।।४९।।
सरलः शाश्वतो वीरो यदुवंशी शिवात्मकः।
प्रद्युम्नो बलकर्त्ता च प्रहर्त्ता दैत्यहाप्रभुः।।५०।।
महाधनो महावीरो वनमाला विभूषणः।
तुलसीदाम शोभाढ्यो जालन्धरविनाशनः।।५१।।
शूरः सूर्यो मृकण्डश्च भास्करो विश्वपूजितः।
रविस्तमोहावह्निश्च वाडवो वडवानलः।।५२।।
दैत्यदर्प-विनाशी च गरुड़ो गरुड़ाग्रजः।
गोपीनाथो महीनाथो वृन्दानाथोऽवरोधकः।।५३।।

१. कश्यपस्य

प्रपंचीं पंचरूपश्च लतागुल्मश्चगोपतिः।
गंगा च यमुना रूपो गोदावेत्रवती तथा।।५४।।
कावेरी नर्मदा तापी गण्डकी सरयूस्तथा।
राजसस्तामसः सत्वी सर्वांगी सर्वलोचनः।।५५।।
सुधामयोऽमृतमयो योगिनीवल्लभः शिवः।
बुद्धो बुद्धिमतां श्रेष्ठो विष्णुर्जिष्णुः शचीपतिः।।५६।।
वंशी वंशधरो लोको विलोको मोहनाशनः।
रव रावो रवो रावो बलोबालबलाहकः।।५७।।
शिवो रुद्रो नलो नीलो लांगलो लांगलाश्रयः।
पारदः पावनो हंसो हंसारूढ़ो जगत्पतिः।।५८।।
मोहिनीमोहनो मायो महामायो महामखी।
वृषो वृषाकपिः कालः कालीदमन कारकः।।५९।।
कुब्जा-भाग्यप्रदो वीरो रजकक्षय कारकः।
कोमलो वारुणो राजा जलजो जलधारकः।।६०।।
हारकः सर्वपापघ्न परमेष्ठी पितामहः।
खंगधारी कृपाकारी राधारमण सुन्दरः।।६१।।
द्वादशारण्य-सम्भोगी शेषनागफणालयः।
कामः श्यामः सुखः श्रीदः श्रीपतिः श्रीनिधिः कृतिः।।६२।।
हरिर्हरो नरो नारो नरोत्तम इषुप्रियः।
गोपाली चित्तहर्त्ता च कर्त्ता संसार तारकः।।६३।।
आदिदेवो महादेवो गौरीगुरुरनाश्रयः।
साधुर्मधुर्विधुर्धाता त्राताऽक्रूरपरायणः।।६४।।
रोलम्बी च हयग्रीवो वानरारिर्वनाश्रयः।
वनं वनी वनाध्यक्षो महावन्द्यो महामुनिः।।६५।।

स्यमन्तक-मणिप्राज्ञो विज्ञो विघ्नविघातकः।
गोवर्द्धनो वर्द्धनीयो वर्द्धनी वर्द्धनप्रियः।।६६।।
वर्द्धन्यो वर्द्धनो वर्द्धी वर्द्धिष्णुः सुमुखप्रियः।
वर्द्धितो वृद्धको वृद्धो वृन्दारकजनप्रियः।।६७।।
गोपाल रमणीभर्त्ता साम्बकुष्ठविनाशकः।
रुक्मिणीहरणः प्रेम प्रेमी चन्द्रावलीपतिः।।६८।।
श्रीकर्त्ता विश्वभर्त्ता च नरो नारायणो बली।
गणोगणपतिश्चैव दत्तात्रेयो महामुनिः।।६६।।
व्यासो नारायणो दिव्यो भव्यो भावुक धारकः।
स्वः श्रेयसः शिवं भद्रं भावुकं भाविकं शुभम्।।७०।।
शुभात्मकः शुभः शास्ता प्रशास्ता मेघनादहा।
ब्रह्मण्यदेवो दीनानामुद्धारकरणक्षमः।।७१।।
कृष्णः कमलपत्राक्षः कृष्णः कमललोचनः।
कृष्णः कामी सदा कृष्णः समस्तप्रियकारकः।।७२।।
नन्दो नन्दी महानन्दी मादी मादनकः किली।
मिली हिली गिली गोली गोलो गोलालयोऽगुली।।७३।।
गुग्गुली मारकी शाखी वटः पिप्पलकः कृती।
म्लेच्छहा कालहर्त्ता च यशोदा यश एव च।।७४।।
अच्युतः केशवो विष्णुर्हरिः सत्यो जनार्दनः।
हंसो नारायणो नीलो, लीनो भक्तिपरायणः।।७५।।
जानकी वल्लभो रामो विरामो विघ्ननाशनः।
सहस्रांशुर्महाभानुर्वीरबाहुर्महोदधिः।।७६।।
समुद्रोऽब्धिः कूपारः पारावारः सरित्पतिः।
गोकुलानन्दकारी च प्रतिज्ञा परिपालकः।।७७।।

सदारामः कृपारामो महारामो धनुर्धरः।
पर्वतः पर्वताकारो गयो गेयो द्विजप्रियः।।७८।।
कम्बलाश्वतरो रामो रामायणप्रवर्त्तकः।
द्यौर्दिवो दिवसो दिव्यो भव्यो भाविभयापहः।।७६।।
पार्वती भाग्यसहितो भर्त्ता-लक्ष्मी विलासवान्।
विलासी साहसी सर्वी गर्वी गर्वितलोचनः।।८०।।
मुरारिर्लोकधर्मज्ञो जीवनो जीवनान्तकः।
यमो यमादिर्यमनो यामी याम-विधायकः।।८१।।
वंशुलीः पांशुलीः पांसुः पाण्डुरर्जुन-वल्लभः।
ललिता चन्द्रिका माला माली मालाम्बुजाश्रयः।।८२।।
अम्बुजाक्षो महायक्षो दक्षश्चिन्तामणिः प्रभुः।
मणिर्दिदिनमणिश्चैव केदारो बदरीश्रयः।।८३।।
बदरीवन सम्प्रीतो व्यासः सत्यवती-सुतः।
अमरारिनिहन्ता च सुधासिन्धुर्विधूदयः।।८४।।
चन्द्रो रविः शिवः शूली चक्री चैव गदाधरः।
श्रीकर्त्ता श्रीपतिः श्रीदः श्रीदेवो देवकीसुतः।।८५।।
श्रीपतिः पुण्डरीकाक्षः पद्मनाभो जगत्पतिः।
वासुदेवोऽप्रमेयात्मा केशवो गरुड़ध्वजः।।८६।।
नारायणः परं धाम देवदेवो महेश्वरः।
चक्रपाणिः कलापूर्णो वेदवेद्यो दयानिधिः।।८७।।
भगवान् सर्वभूतेशो गोपालः सर्वपालकः।
अनन्तो निर्गुणोऽनन्तो निर्विकल्पो निरंजनः।।८८।।
निराधारो निराकारो निराभासो निराश्रयः।
पुरुषः प्रणवातीतो मुकुन्दः परमेश्वरः।।८६।।

क्षणावनिः सार्वभौमो वैकुण्ठो भक्तवत्सलः।
विष्णुर्दामोदरः कृष्णो माधवो मथुरापतिः।।९०।।
देवकीगर्भसम्भूतो यशोदावत्सलो हरिः।
शिवः संकर्षणः शम्भुर्भूतनाथो दिवस्पतिः।।९१।।
अव्ययः सर्वधर्मज्ञो निर्मलोनिरुपद्रवः।
निर्वाणनायको नित्यो नीलजीमूत सन्निभः।।९२।।
कलाक्षयश्च सर्वज्ञः कमलारूपतत्परः।
हृषीकेशः पीतवासा वसुदेवप्रियात्मजः।।९३।।
नन्दगोपकुमारार्यो नवनीताशनः प्रभुः।
पुराणपुरुषः श्रेष्ठः शंखपाणिः सुविक्रमः।।९४।।
अनिरुद्धश्चक्ररथः शाङ्‌र्गपाणिश्चतुर्भुजः।
गदाधरः सुरार्त्तिघ्नो गोविन्दो नन्दकायुधः।।९५।।
वृन्दावनचरः शौरिर्वेणुवाद्यविशारदः।
तृणावर्त्तान्तको भीम साहसो बहुविक्रमः।।९६।।
शकटासुर-संहारी बकासुर-विनाशनः।
धेनुकासुर-संहारी पूतनारिर्नृकेसरी।।९७।।
पितामहो गुरुः साक्षी प्रत्यगात्मा सदाशिवः।
अप्रमेयप्रभुः प्राज्ञोऽप्रतर्क्यः स्वप्नवर्द्धनः।।९८।।
धन्यो मान्यो भवो भावो धीरः शान्तो जगद्‌गुरुः।
अन्तर्यामीश्वरो दिव्यो दैवज्ञो देवता गुरुः।।९९।।
क्षीराब्धिशयनो धाता लक्ष्मीवान् लक्ष्मणाग्रजः।
धात्रीपतिरमेयात्मा चन्द्रशेखर पूजितः।।१००।।
लोकसाक्षी जगच्चक्षुः पुण्यचारित्र कीर्त्तनः।
कोटिमन्मथ-सौन्दर्यो जगन्मोहनविग्रहः।।१०१।।

मन्दस्मिततमो गोपो गोपिका-परिवेष्टितः।
फुल्लारविन्दनयनश्चाणूरांघ्रिनिषूदन।।१०२।।
इन्दीवरदलश्यामो बर्हीबर्हावतंसकः।
मुरलीनिनादाह्लादो दिव्य माल्याम्बरावृतः।।१०३।।
सुकपोलयुगः सुभ्रुर्युगलः सुललाटकः।
कम्बुग्रीवो विशालाक्षो लक्ष्मीवान् शुभलक्षणः।।१०४।।
पीनवक्षाश्चतुर्बाहुश्चतुर्मूर्तिस्त्रिविक्रमः।
कलंकरहितः शुद्धो दुष्ट शत्रुनिवर्हणः।।१०५।।
किरीटिकुण्डलधरः कटकांगदमण्डितः।
मुद्रिकाभरणोपेतः कटिसूत्रविराजितः।।१०६।।
मञ्जीररञ्जितपदः सर्वाभरणभूषितः।
विन्यस्तपादयुगलो दिव्य मंगल विग्रहः।।१०७।।
गोपिकानयनानन्दः पूर्णचन्द्रनिभाननः।
समस्त जगदानन्दः सुन्दरो लोकनन्दनः।।१०८।।
यमुनातीरसञ्चारी राधामन्मथवैभवः।
गोपनारीप्रियो दान्तो गोपीवस्त्रापहारकः।।१०९।।
शृंगारमूर्त्तिः श्रीदामा[१]तारको मूलकारणः।
सृष्टिसंरक्षणोपायः क्रूरासुरविभञ्जनः।।११०।।
नरकासुरसंहारी मुरारिर्वैरिमर्दनः।
आदितेयप्रियो दैत्यभीकरश्चेन्दुशेखरः।।१११।।
जरासन्धकुलध्वंसी कंसाराति सुविक्रमः।
पुण्यश्लोकः कीर्त्तनीयो यादवेन्द्रो जगन्नुतः।।११२।।
रुक्मिणीरमणः सत्यभामा-जाम्बवतीप्रियः।
मित्रविन्दानाग्नजितीलक्ष्मणासमुपासितः।।११३।।

---

१. श्रीधामा

सुधाकरकुलेजातोऽनन्तः प्रबल-विक्रमः।
सर्व सौभाग्य सम्पन्नो द्वारिकायामुपस्थितः।।११४।।
भद्रा सूर्यसुतानाथो लीलामानुषविग्रहः।
सहस्रषोडशस्त्रीशो भोगमोक्षैकदायकः।।११५।।
वेदान्त वेद्यः संवेद्यो वेद्यो ब्रह्माण्डनायकः।
गोवर्धनधरोनाथः सर्वजीवदयापरः।।११६।।
मूर्तिमान् सर्वभूतात्मा आर्त्तत्राणपरायणः।
सर्वज्ञः सर्वसुलभः सर्वशास्त्रविशारदः।।११७।।
षडगुणैश्वर्य सम्पन्नः पूर्णकामो धुरन्धरः।
महानुभावः कैवल्यदायको लोकनायकः।।११८।।
आदिमध्यान्तरहितः शुद्ध सात्विक विग्रहः।
असमानः समस्तात्मा शरणागतवत्सलः।।११९।।
उत्पत्तिस्थितिसंहारकारणं सर्वकारणम्।
गम्भीरः सर्वभावज्ञः सच्चिदानन्दविग्रहः।।१२०।।
विष्वक्सेनः सत्यसन्धः सत्यवान्सत्यविक्रमः।
सत्यव्रतः सत्यसंज्ञः सर्वधर्मपरायणः।।१२१।।
आपन्नार्तिप्रशमनो द्रौपदीमानरक्षकः।
कन्दर्पजनकः प्राज्ञो जगन्नाटकवैभवः।।१२२।।
भक्तिवश्योगुणातीतः सर्वैश्वर्यप्रदायकः।
दमघोषसुतद्वेषी बाणबाहुविखण्डनः।।१२३।।
भीष्मभक्तिप्रदो दिव्यः कौरवान्वयनाशनः।
कौन्तेयप्रियबन्धुश्च पार्थस्यन्दनसारथिः।।१२४।।
नारसिंहो महावीरः स्तम्भजातो महाबलः।
प्रह्लादवरदः सत्यो देव पूज्योऽभयंकरः।।१२५।।

उपेन्द्रइन्द्रवरदो वामनो बलिबन्धनः।
गजेन्द्रवरदः स्वामी सर्वदेवनमस्कृतः।।१२६।।
शेषपर्यंकशयनो वैनतेयो रथोजयी।
अव्याहतबलैश्वर्यसम्पन्नः पूर्णमानसः।।१२७।।
योगेश्वरेश्वरः साक्षी क्षेत्रज्ञो ज्ञान-दायकः।
योगिहृत्पंकजावासो योगमायासमन्वितः।।१२८।।
नादबिन्दु कलातीतश्चतुर्वर्गफलप्रदः।
सुषुम्नामार्गसंचारी देहस्यान्तरसंस्थितः।।१२९।।
देहेन्द्रियमनः प्राण साक्षी चेतः प्रसादकः।
सूक्ष्मः सर्वगतो देही ज्ञानदर्पणगोचरः।।१३०।।
तत्वत्रयात्मकोऽव्यक्तः कुण्डलीसमुपाश्रितः।
ब्रह्मण्यः सर्वधर्मज्ञः शान्तो दान्तो गतक्लमः।।१३१।।
श्रीनिवासः सदानन्दो विश्वमूर्तिर्महाप्रभुः।
सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्।।१३२।।
समस्तभुवनाधारः समस्तप्राणरक्षकः।
समस्त सर्वभावज्ञो गोपिकाप्राणवल्लभः।।१३३।।
नित्योत्सवो नित्यसौख्यो नित्यश्रीर्नित्यमंगलः।
व्यूहार्चितो जगन्नाथः श्रीवैकुण्ठपुराधिपः।।१३४।।
पूर्णानन्दघनीभूतो गोपवेषधरो हरिः।
कलाप कुसुमश्यामः कोमलः शान्तविग्रहः।।१३५।।
गोपांगनावृतोऽनन्तो वृन्दावनसमाश्रयः।
वेणुवादरतः श्रेष्ठो देवानां हितकारकः।।१३६।।
बालक्रीड़ासमासक्तो नवनीतस्य तस्करः।
गोपाल कामिनीजारश्चौरजारशिखामणिः।।१३७।।

परं ज्योतिः पराकाशः परावासः परिस्फुटः।
अष्टादशाक्षरो मन्त्रो व्यापको लोकपावनः।।१३८।।
सप्तकोटिमहामन्त्रशेखरो देवशेखरः।
विज्ञानज्ञानसन्धानस्तेजोराशिर्जगत्पतिः।।१३६।।
भक्तलोकप्रसन्नात्मा भक्तमन्दारविग्रहः।
भक्तदारिद्र्य-दमनो भक्तानां प्रीतिदायकः।।१४०।।
भक्ताधीनमनाः पूज्यो भक्तलोकशिवंकरः।
भक्ताभीष्टप्रदः सर्वभक्ताघौघनिकृन्तनः।।१४१।।
अपार करुणासिन्धुर्भगवान् भक्ततत्परः।।१४२।।

माहात्म्य

इति श्रीराधिकानाथ सहस्रनाम कीर्त्तनम्।
स्मरणात्पापराशिनांखण्डनं मृत्युनाशनम्।।१।।
वैष्णवानां प्रियकरं महारोग-निवारणम्।
ब्रह्महत्या सुरापानं परस्त्रीगमनं तथा।।२।।
परद्रव्यापहरणम् परद्वेष-समन्वितम्।
मानसं वाचिकं कायं यत्पापं पापसम्भवम्।।३।।
सहस्रनाम पठनात्सर्वं नश्यति तत्क्षणात्
महादारिद्र्ययुक्तो यो वैष्णवो विष्णुभक्तिमान्।।४।।
कार्त्तिक्यां सम्पठेद्रात्रौ शतमष्टोत्तरं क्रमात्।
पीताम्बरधरो धीमान्सुगन्धिपुष्पचन्दनैः।।५।।
पुस्तकं पूजयित्वा तु नैवेद्यादिभिरेव च।
राधाध्यानांकितो धीरः वनमाला विभूषितः।।६।।

शतमष्टोत्तरं देवि पठेन्नाम सहस्रकम्।
चैत्र शुक्ले च कृष्णे च कुहू संक्रान्तिवासरे।।७।।
पठितव्यं प्रयत्नेन त्रैलोक्यं मोहयेत् क्षणात्।
तुलसीमालया युक्तो वैष्णवो भक्तितत्परः।।८।।
रविवारे च शुक्रे च द्वादश्यां श्राद्धवासरे।
ब्राह्मणं पूजयित्वा च भोजयित्वा विधानतः।।६।।
पठेन्नामसंहस्रच ततः सिद्धिः प्रजायते।
महानिशायां सततं वैष्णवो यः पठेत्सदा।।१०।।
देशान्तरगता लक्ष्मीः समायाति न संशयः।
त्रैलोक्ये च महादेवी सुन्दर्यः काममोहिताः।।११।।
मुग्धाः स्वयं समायान्ति वैष्णवश्च भजन्तिताः।
रोगी रोगात्प्रमुच्येत बद्धो मुच्येत बन्धनात्।।१२।।
गुर्विणी जनयेत्पुत्रं कन्या विन्दति सत्पतिम्।
राजानो वश्यतां यान्ति किं पुनः क्षुद्रमानवाः।।१३।।
सहस्रनाम श्रवणात् पठनात्पूजनात् प्रिये।
धारणात्सर्वमाप्नोति वैष्णवो नात्र संशयः।।१४।।
वंशीवटे चान्यवटे तथा पिप्पलकेऽथवा।
कदम्बपादपतले गोपालमूर्तिसन्निधौ।।१५।।
यः पठेद्वैष्णवो नित्यं स याति हरिमन्दिरम्।
कृष्णेनोक्तं राधिकायै मयि प्रोक्तं पुरा शिवे।।१६।।
नारदाय मया प्रोक्तं नारदेन प्रकाशितम्।
मया त्वयि वरारोहे प्रोक्तमेतत्सुदुर्लभम्।।१७।।
गोपनीयं प्रयत्नेन न प्रकाश्यं कथञ्चन।
शठाय पापिने चैव लम्पटाय विशेषतः।।१८।।

न दातव्यं, न दातव्यं, न दातव्यं कदाचन।
देयं शिष्याय शान्ताय विष्णुभक्तिरताय च।।१९।।
गोदान ब्रह्मयज्ञादेवी जपेय शतस्य च।
अश्वमेध सहस्रस्य फलं पाठे भवेद्ध्रुवम्।।२०।।
मोहनं स्तम्भनं चैव मारणोच्चाटनादिकम्।
यद्यद्वाञ्छति चित्तेन तत्तत्प्राप्नोति वैष्णवः।।२१।।
एकादश्यां नरः स्नात्वा सुगन्धिद्रव्यतैलकैः।
आहारं ब्राह्मणे दत्त्वा दक्षिणां स्वर्णभूषणम्।।२२।।
तत आरम्भ कर्त्ताऽस्य सर्वं प्राप्नोति मानवः।
शतावृत्तं सहस्रञ्च यः पठेद्वैष्णवो जनः।।२३।।
श्रीवृन्दावनचन्द्रस्य प्रसादात्सर्वमाप्नुयात्।
यद्गृहे पुस्तकं देवि पूजितं चैव तिष्ठति।।२४।।
न मारी न च दुर्भिक्षं नोपसर्गभयं क्वचित्।
सर्पादि भूतयक्षाद्या नश्यन्ति नात्र संशयः।।२५।।
श्रीगोपाल महादेवि वसेत्तस्य गृहे सदा।
गृहे यस्य सहस्रं च नाम्नां तिष्ठति पूजितम्।।२६।।

इति श्रीसम्मोहन महातन्त्रे गोपाल रहस्य, हरगौरी संवादे
श्रीगोपाल सहस्रनाम स्तोत्रं सम्पूर्णम्।

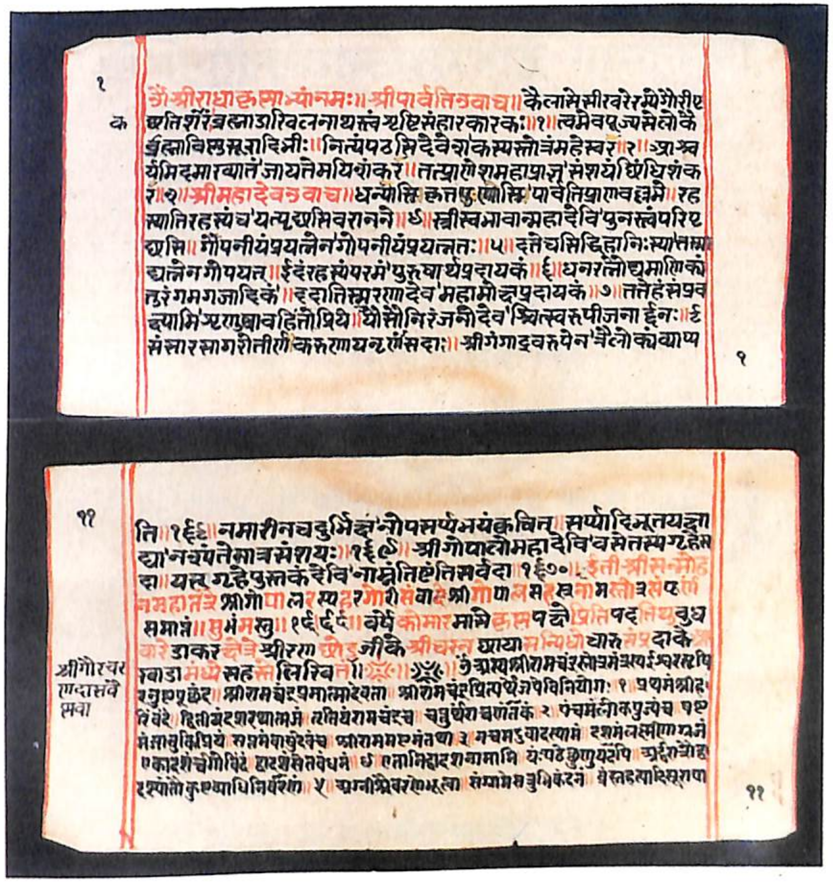

संस्थान में संरक्षित सम्मोहन तन्त्रोक्त श्रीगोपालसहस्रनाम की प्राचीन हस्तलिखित प्रति के प्रथम और अन्तिम पृष्ठ के चित्र।

अन्तिम पृष्ठ की पाँचवीं पंक्ति में लिपिकाल सम्वत् १६६९ स्पष्ट है।

(सातवीं पंक्ति के मध्य से अन्य ग्रन्थ आरम्भ हो जाता है)

श्रीगोपाल अष्टोत्तरशत नामावली

१. ॐ श्रीकृष्णाय नमः।

२. ॐ कमलानाथाय नमः।

३. ॐ वासुदेवाय नमः।

४. ॐसनातनाय नमः

५. ॐ वसुदेवात्मजाय नमः।

६. ॐ पुण्याय नमः।

७. ॐ लीलामानुषविग्रहाय नमः।

८. ॐ श्रीवत्सकौस्तुभधराय नमः।

९. ॐ श्रीयशोदावत्सलाय नमः।

१०. ॐ हरये नमः

११. ॐ चतुर्भुजादिचक्रासिगदा शंखाद्युदायुधाय नमः।

१२. ॐ देवकीनन्दनाय नमः

१३. ॐ श्रीशाय नमः।

१४. ॐ नन्दगोपप्रियात्मजाय नमः।

१५. ॐ यमुनावेगसंहारिणे नमः।

१६. ॐ बलभद्रप्रियानुजाय नमः।

१७. ॐ पूतनाजीवितहराय नमः।

१८. ॐ शकटासुरभंजनाय नमः।

१६. ॐ नन्दव्रजजनानन्दाय नमः।
२०. ॐ सच्चिदानन्दविग्रहाय नमः।
२१. ॐ नवनीतविलिप्तांगाय नमः।
२२. ॐ नवनीतनटाय नमः।
२३. ॐ अनघाय नमः।
२४. ॐ नवनीतनवाहाराय नमः।
२५. ॐ मुचकुंदप्रसादकाय नमः।
२६. ॐ षोडशस्त्रीसहस्रेशाय नमः।
२७. ॐ स्त्रीभंगललिताकृतये नमः।
२८. ॐ शुकवागमृतबिन्दवे नमः।
२६. ॐ गोविन्दाय नमः।
३०. ॐ गोविदांपतये नमः।
३१. ॐ वत्सवाटकूचराय नमः।
३२. ॐ अनन्ताय नमः।
३३. ॐ धेनुकासुरखण्डनाय नमः।
३४. ॐ तृणीकृतस्तृणावर्त्ताय नमः।
३५. ॐ यमलार्जुनभंजनाय नमः।
३६. ॐ उत्तालतालभेत्रे नमः।
३७. ॐ तमालश्यामलाकृतये नमः।
३८. ॐ गोपगोपीश्वराय नमः।
३६. ॐ योगिने नमः
४०. ॐ कोटिसूर्यसमप्रभाय नमः।
४१. ॐ इलापतये नमः।

४२. ॐ परंज्योतिषे नमः।
४३. ॐ यादवेन्द्राय नमः।
४४. ॐ यदूद्वहाय नमः।
४५. ॐ वनमालिने नमः।
४६. ॐ पीतवाससे नमः।
४७. ॐ पारिजातापहारकाय नमः।
४८. ॐ गोवर्धनाचलोद्धर्त्रे नमः।
४६. ॐ गोपालाय नमः।
५०. ॐ सर्वपालकाय नमः।
५१. ॐ अजाय नमः।
५२. ॐ निरंजनाय नमः।
५३. ॐ कामजनकाय नमः।
५४. ॐ कंजलोचनाय नमः।
५५. ॐ मधुहाय नमः।
५६. ॐ मथुरानाथाय नमः।
५७. ॐ द्वारकानायकाय नमः।
५८. ॐ बलये नमः।
५६. ॐ वृन्दावनान्तसंचारिणे नमः।
६०. ॐ तुलसीदामभूषणाय नमः।
६१. ॐ मुष्टिकासुरचाणूरमदयुद्धविशारदाय नमः।
६२. ॐ संसारवैरिणे नमः।
६३. ॐ कंसारये नमः।
६४. ॐ मुरारये नमः।

६५. ॐ नरकान्तकाय नमः।
६६. ॐ स्यमन्तकमणिहर्त्रे नमः।
६७. ॐ नरनारायणात्मकाय नमः।
६८. ॐकुब्जाकृष्णाम्बरधराय नमः।
६९. ॐ मायिने नमः।
७०. ॐ परमपुरुषाय नमः।
७१. ॐ अनादि ब्रह्मचारिणे नमः।
७२. ॐ कृष्णावसनकर्षाकाय नमः।
७३. ॐ शिशुपालशिरच्छेत्रे नमः।
७४. ॐ दुर्योधनकुलान्तकाय नमः।
७५. ॐ विदूराक्रूरवरदाय नमः।
७६. ॐ विश्वरूपप्रदर्शकाय नमः।
७७. ॐ सत्यवादिने नमः।
७८. ॐ सत्यसंकल्पाय नमः।
७९. ॐ सत्यभामारताय नमः।
८०. ॐ जयिने नमः।
८१. ॐ सुभद्रापूर्वजाय नमः।
८२. ॐ ओजिष्णवे नमः।
८३. ॐ भीष्ममुक्तिप्रदायकाय नमः।
८४. ॐ जगद्गुरवे नमः।
८५. ॐ जगन्नाथाय नमः।
८६. ॐ वेणुनादविशारदाय नमः।
८७. ॐ वृषभासुरविध्वंसिने नमः।

८८. ॐ वाणासुरकरांतकाय नमः।
८९. ॐ युधिष्ठिरप्रतिष्ठात्रे नमः।
९०. ॐ बर्हिबर्हावतंसकाय नमः।
९१. ॐ पार्थसारथये नमः।
९२. ॐ अव्यक्ताय नमः।
९३. ॐ गीतामृतमहोदधये नमः।
९४. ॐ कालियफणिमाणिक्यरंजित श्रीपदाम्बुजाय नमः।
९५. ॐ दामोदराय नमः।
९६. ॐ यज्ञभोक्त्रे नमः।
९७. ॐ दानवेन्द्रविनाशाय नमः।
९८. ॐ नारायणाय नमः।
९९. ॐ परब्रह्मणे नमः।
१००. ॐ पन्नगाशनवाहनाय नमः।
१०१. ॐ जलक्रीडासमासक्त गोपीवस्त्रापहारकाय नमः।
१०२. ॐ पुण्यश्लोकाय नमः।
१०३. ॐ तीर्थपदाय नमः।
१०४. ॐ वेदवेद्याय नमः।
१०५. ॐ दयानिधये नमः।
१०६. ॐ सर्वभूतात्मकाय नमः।
१०७. ॐ सर्वग्रहरूपिणे नमः।
१०८. ॐ परात्पराय नमः।

इति श्रीगोपाल अष्टोत्तरशत नामावली सम्पूर्णम्।

श्रीगोपाल ध्यानम्

सजलजलदनीलं दर्शितोदारशीलं
करतलधृतशैलं वेणुवाद्यैरसालम्।
व्रजजनकुलपालं कामिनीकेलिलोलं
तरुणतुलसिमालं नौमि गोपालबालम्।।

बालोऽयमालोल विलोचनेन
वक्त्रेण चित्रीकृतदिङ्मुखेन।
वेशेन घोषोचित भूषणेन
मुग्धेन दुग्धे नयनोत्सवं नः।

–लीलाशुक विल्वमंगल

श्रीनन्दकुमाराष्टकम्

सुन्दर गोपालं उरवनमालं नयनविशालं दुःखहरम्।
वृन्दावनचन्द्रमानन्दकन्दं परमानन्दं धरणिधरम्।।
वल्लभघनश्यामं पूर्णकामम् अत्यभिरामं प्रीतिकरम्।
भज नन्दकुमारं सर्वसुखसारं तत्त्वविचारं ब्रह्मपरम्।।१।।

सुन्दरवारिजवदनं निर्जितमदनम् आनन्दसदनं मुकुटधरम्
गुञ्जाकृतिहारं विपिनविहारं परमोदारं चीरहरम्।।
वल्लभपटपीतं कृतउपवीतं करनवनीतं विबुधवरम्।
भज नन्दकुमारं सर्वसुखसारं तत्त्वविचारं ब्रह्मपरम्।।२।।

शोभित मुखधूलं यमुनाकूलं निपट अतूलं सुखदतरम्
मुखमण्डितरेणुं चारितधेनुं वादित वेणुं मधुरसुरम्।।
वल्लभमतिविमलं शुभपदकमलं नखरुचिअमलं तिमिरहरम्।
भज नन्दकुमारं सर्वसुखसारं तत्त्वविचारं ब्रह्मपरम्।।३।।

शिरमुकुटसुदेशं कुञ्चितकेशं नटवरवेशं कामवरम्।
मायाकृतमनुजं हलधरअनुजं प्रतिहतदनुजं भारहरम्।।
वल्लभव्रजपालं सुभगसुचालं हितमनुकालं भाववरम्।
भज नन्दकुमारं सर्वसुखसारं तत्त्वविचारं ब्रह्मपरम्।।४।।

इन्दीवरभासं प्रकटसुरासं कुसुमविकासं वंशिधरम्।
हृतमन्मथमानं रूपनिधानं कृतकलगानं चित्तहरम्।।
वल्लभमृदुहासं कुञ्जनिवासं विविध विलासं केलिकरम्।
भज नन्दकुमारं सर्वसुखसारं तत्त्वविचारं ब्रह्मपरम्।।५।।

अतिपर प्रवीणं पालित दीनं भक्ताधीनं कर्मकरम्।
मोहनमतिधीरं फणिबलवीरं हतपतवीरं तरलतरम्।।
वल्लभ ब्रजरमणं वारिजवदनं हलधरशमनं शैलधरम्।
भज नन्दकुमारं सर्वसुखसारं तत्त्वविचारं ब्रह्मपरम्।।६।।

जलधर द्युति अंगं ललितत्रिभंगं बहुकृतरंगं रसिकवरम्।
गोकुलपरिवारं मदनाकारं कुञ्जविहारं गूढतरम्।।
वल्लभव्रजचन्द्रं सुभगसुछन्दं कृतआनन्दं भ्रान्तिहरम्।
भज नन्दकुमारं सर्वसुखसारं तत्त्वविचारं ब्रह्मपरम्।।७।।

वन्दितयुगचरणं पावनकरणं जगदुद्धरणं विमलधरम्।
कालियशिरगमनं कृतफणिनमनं घाततियमनं मृदुलतरम्।
वल्लभदुःखहरणं निर्मलचरणं अशरणशरणं मुक्तिकरम्।
भज नन्दकुमारं सर्वसुखसारं तत्त्वविचारं ब्रह्मपरम्।।८।।

इति श्रीमद्वल्लभाचार्यपादकृत श्रीनन्दकुमाराष्टकम्।

श्रीगोपालराज स्तोत्रम्

वपुरतुलतमालस्फीतबाहूरुशाखो–
परिधृतगिरिवर्य स्वर्णवर्णैक-गुच्छः।
कटिकृतपरिहस्ता रक्तशाखाग्रह्वद्यः
प्रतपति गिरिपट्टे सुष्ठु गोपालराजः।।१।।

रुचिरदृगभिधाने पंकजे फुल्लयन्तं
सुभग वदनगात्रं चित्रचन्द्रं दधानः।
विलसदधरबिम्बघ्रायिनासाशुकोष्ठः
प्रतपति गिरिपट्टे सुष्ठु गोपालराजः।।२।।

चलकुटिलतरभ्रूकार्मुकान्तर्दृगन्त–
क्रमणनिशितबाणं शीघ्रयानं दधानः।
दरयितुमिव राधाधैर्यपारीन्द्रवर्यं
प्रतपति गिरिपट्टे सुष्ठु गोपालराजः।।३।।

असुलभमिह राधावक्त्रचुम्बं विजान–
न्निव विलसितुमेतच्छाययापि प्रदूरात्।
मुकुरयुगलमच्छं गण्डदम्भेन विभ्रत्
प्रतपति गिरिपट्टे सुष्ठु गोपालराजः।।४।।

रुचिनिकरविराजद्दाडिमीपक्वबीज—
प्रकरविजयिदन्तश्रेणिसौरम्यवातैः।
रचितयुवतिचेतः कीरजिह्वातिलौल्यः
प्रतपति गिरिपट्टे सुष्ठु गोपालराजः।।५।।

वचनमधुरसानां पायनैर्गोपरामा-
कुलमुरुधृतधामाप्युन्मदी कृत्य कामम्।
अभिमतरतिरत्नान्याददानस्ततो द्राक्
प्रतपति गिरिपट्टे सुष्ठु गोपालराजः।।६।।

कुवलयनिभभा कौंकुमद्रावपुण्ड्रं
दधदिव घनषण्डे निश्चलच्चञ्चलाग्रम्।
रचयितुमिव साध्वीकीर्तिमुग्धालिभीतिं
प्रतपति गिरिपट्टे सुष्ठु गोपालराजः।।७।।

श्रवणमदनरज्जू सज्जयँल्लज्जिराधा-
नयनचलचकोरौ बन्धुमुत्कः किशोरौ।
कृतमकरवतंसस्निग्ध चन्द्रांशुचारः
प्रतपति गिरिपट्टे सुष्ठ गोपालराजः।।८।।

युवतिकरणरत्नव्रातमाच्छिद्यनेत्र—
भ्रमणपटुभटैस्तं न्यस्य हृत्सौधमध्ये।
गरुडमणिकवाटेनोरसाधुष्य हृष्टः
प्रतपति गिरिपट्टे सुष्ठु गोपालराजः।।६।।

त्रिवलिललिततुन्दस्यन्दिनाभीह्रदोद्य-
त्तनुरुहततिसर्पीमत्र बिभ्राण उग्रम्।
युवतिपतिभयाखुग्रासनायेव सद्यः।
प्रतपति गिरिपट्टे सुष्ठु गोपालराजः।।१०।।

मरकतकृतरम्भागर्वसर्वंकषोरु
द्वयमुरुरसधामप्रेयसीनां दधानः।
स्फुरदविरलपुष्टश्रोणि भारातिरम्यः
प्रतपति गिरिपट्टे सुष्ठु गोपालराजः।।११।।

मदनमणिवरालीसंपुटक्षुल्लजानु-
द्वयसुललितजंघामञ्जुपादाब्जयुग्मः।
विविधवसनभूषाभूषितांगः सुकण्ठः
प्रतपति गिरिपट्टे सुष्ठु गोपालराजः।।१२।।

कलितवपुरिव श्रीविट्ठलप्रेमपुञ्जः
परिजनपरिचर्याधैर्यपीयूषपुष्टः।
द्युतिभरजितमाद्यन्मन्मथोद्यत् समाजः
प्रतपति गिरिपट्टे सुष्ठु गोपालराजः।।१३।।

विविधभजनपुष्पैरिष्टनामानि गृह्णन्
पुलकिततनुरिह श्रीविट्ठलस्योरुसख्यैः।
प्रणयमणिसरं स्वं हन्त तस्मै ददानः
प्रतपति गिरिपट्टे सुष्ठु गोपालराजः।।१४।।

गिरिकुलपतिपट्टोल्लासिगोपालराज—
स्तुतिविलसितपद्यान्युद्भटप्रेमदानि।
नटयति रसनाग्रे श्रद्धया निर्भरं यः।
स सपदि लभते तत्प्रेमरत्नं प्रसादम्।।१५।।

इति श्रीमद्रघुनाथदासगोस्वामी-विरचित-स्तवावल्यां
श्रीगोपालराज स्तोत्रं सम्पूर्णम्

श्रीमज्जीव गोस्वामी कृत

श्रीगोपालाष्टकम्

।। श्रीश्रीगोपालाय नमः।।

नव नीरद नीलिम चौर तनुं।
परिचारक वाञ्छित कल्पतरुम्।।
चतुरानन सेवित पादयुगम्।
प्रणमामि हरिं ब्रजराजसुतं।।१।।

शिशु गोपगणावृत वेणुकरं।
धृत शंख रथांग गदाकमलम्।।
वृषभानुसुतोष्ठ सुधारसपम्।
प्रणमामि हरिं ब्रजराजसुतम्।।२।।

वनमाल्यविभूषित दैत्यरिपुम्।
परिबद्धसुपिच्छ विचित्रशिखम्।।
मणिकुण्डलमण्डितगण्डयुगम्।
प्रणमामि हरिं ब्रजराजसुतम्।।३।।

ब्रजगोपसुताकुचकुम्भशमं।
यमुनाजलकुन्तलहर्षह्रदम्।।

सरसीरुहलोचन चन्द्रमुखम्।
प्रणमामि हरिं ब्रजराजसुतम्।।४।।

मधुसूदन माधव विश्वगतिम्।
गजराजविराजित मन्दगतिम्।।
तनुमध्य सुशोभित पीतपटं।
प्रणमामि हरिं ब्रजराजसुतम्।।५।।

गरुडध्वजमच्युतमब्धिलयं।
करुणानिधि धार्मिक सर्वधरं।।
परमेश्वर कारण तत्त्वविदं।
प्रणमामि हरिं ब्रजराजसुतम्।।६।।

नव कार्मुकतारण यज्ञभुजम्।
जनमोहनमादिमनन्तगुणम्।।
मुरलीधर यादव लोकगुरुम्।
प्रणमामि हरिं ब्रजराजसुतम्।।७।।

धरणीधर केशव पुण्यमयं।
जगदीश जनार्दन देववरं।।
पुरुषोत्तम वामन दुष्टहरं।
प्रणमामि हरिं ब्रजराजसुतम्।।८।।

इति श्रीमज्जीवगोस्वामी कृत श्रीगोपालाष्टकम्।

(इस स्तोत्र की एकमात्र प्रति संस्थान में संरक्षित है)

श्रीगोपालदेवाष्टकम्

मधुर-मृदुल-चित्तः प्रेममात्रैक-वित्तः
स्वजन-रचित-वेषः प्राप्त-शोभा-विशेषः।
विविध-मणिमयालंकारवान्सर्वकालं
स्फुरतु हृदि स एव श्रीलगोपालदेवः।।१।।

निरुपम-गुण-रूपः सर्व-माधुर्य-भूपः
श्रित-तनुरुचि-दास्यः कोटिचन्द्र-स्तुतास्यः।
अमृत-विजयि-हास्यः प्रोच्छलच्चिल्लि-लास्यः
स्फुरतु हृदि स एव श्रीलगोपालदेवः।।२।।

धृत-नव-परभागः सव्य-हस्त-स्थितागः।
प्रकटित-निजकक्षः प्राप्त-लावण्यलक्षः।
कृत-निज-जन-रक्षः प्रेमविस्तारदक्षः।
स्फुरतु हृदि स एव श्रीलगोपालदेवः।।३।।

क्रम-वलदनुराग-स्वप्रियापांग-भाग
ध्वनित-रसविलास-ज्ञान-विज्ञापि-हासः।
स्मृत-रतिपति-यागः प्रीति-हंसी-तड़ागः
स्फुरतु हृदि स एव श्रीलगोपालदेवः।।४।।

मधुरिम-भर-मग्ने भात्यसव्येऽवलग्ने
त्रिवलिरलसवत्त्वात् यस्य पुष्टानतत्वात्।
इतरत इह तस्या मार-रेखेव रस्या
स्फुरतु हृदि स एव श्रीलगोपालदेवः।।५।।

वहति वलितहर्षं वाह्यंश्चानुवर्षं
भजति च स्वगणं स्वं भोजयन् योऽर्पयन स्वयम्
गिरि-मुकुट मणिं श्रीदामवन्मित्रता-श्रीः
स्फुरतु हृदि स एव श्रीलगोपालदेवः।।६।।

अधिधरमनुरागं माधवेन्द्रस्य तन्वं-
स्तदमल-हृदयोत्थां प्रेमसेवा विवृण्वन्
प्रकटित-निजशक्तया वल्लभाचार्य-भक्त्या
स्फुरतु हृदि स एव श्रीलगोपालदेवः।।७।।

प्रतिदिनमधुनापि प्रेक्ष्यते सर्वदापि
प्रणय-सुरस-चर्या यस्य वर्यासपर्या।
गणयतुकति भोगान् कः कृतीतत्प्रयोगान्
स्फुरतु हृदि स एवं श्रीलगोपालदेवः।।८।।

गिरिधर-वरदेवस्याष्टकेनेममेव
स्मरति निशिदिने वा यो गृहे वा वने वा।
अकुटिल-हृदयस्य प्रेमदत्वेन तस्य
स्फुरतु हृदि स एव श्रीलगोपालदेवः।।९।।

इति श्रीमद्विश्वनाथचक्रवर्तिपादविरचित स्तवामृतलहर्यां
श्रीगोपालदेवाष्टकं सम्पूर्णम्।

गोपाल अनुध्यानाष्टकम्

।। श्रीराधाकृष्णाभ्यां नमः ।।

सर्वत्रोद्भवपुष्पपुष्पितलतागुल्मद्रुमैरर्चितं,
भ्राम्यद्भृंगमयूरकोकिलशुकैर्हंसादिभिर्नादितम्।
कालिन्दीजललोलचारिविलसत्पद्मोत्तमैः शोभितम्,
सद्वृन्दारकवृन्दवन्दितमहं वृन्दावनं भावये।।१।।
तन्मध्ये मणिरत्नभूमिविलसद्रत्नस्रवैः पादपैः
कल्हारोत्पलकंजचार्यनिलगैस्तद्धूलिभिर्धूसरा।
सूर्य्याणामयुतप्रभासुरचितैर्द्वारैश्चतुर्भिर्युता,
मायाकालविवर्ज्जिता प्रकृतिजैष्षद्भिर्विकारैस्तथा।।२।।
तन्मध्ये मणिमण्डपं सुरुचिरं चित्रैर्वितानैर्युतं,
मुक्तादामविभूषितं सुरवरैराराधनीयं सदा।
तत्रैवाखिललोकवन्दितमहत्कल्पद्रुमं सुप्रभम्,
नाना रत्नफलोज्ज्वज्वलंकिसलैच्छायाद्भुतं भावये।।३।।
तन्मूले मणिरत्नजातघटितं सिंहासने भास्वरम्,
मुक्तादामविभूषितेन मणिमच्छत्रेन संशोभितम्।
तन्मध्येऽष्टदलाकृतौ मणिगणैर्सूर्यायुताभैर्युते,
पद्मे देववरार्चिते बहुमते कृष्णश्च राधाम्भजे।।४।।

दिव्यम्वर्हावतंस नवघन रुचिरं विद्युदाभासवासं,
कस्तूरी भालदेशं सुजलजनयनं कुण्डलाक्रान्तगण्डम्।
नासाग्रे चारुमुक्तं मृदुतर सुधयावेणुरवं पूरयन्तम्।
वन्दे कृष्णं त्रिभंगं मणिगणरचितैर्भूषणैर्भूषितांगम्।।५।।
तद्वामांगेनुरूपां वृषरवितनयां तप्तहेमाभकान्तिम्।
नानालंकार युक्तान्मणिगणखचितां नीलकौशेयवासां।
कान्तो यान्ते मुखाब्जे सुसुरभिरचितां वीटिकामर्पयन्तीं,
वन्दे सौन्दर्य्यसारां सकलगुणयुतां केशवे न्यस्त दृष्टिं।।६।
नानावर्णतनुप्रभाअभिगता दिव्याम्बरा गोपिका,
नानावर्णमणिप्रवालरचितैराभूषणैः भूषिताः।
नाना भोगपदार्थभाजनकरास्तन्न्ययस्तबुद्धीक्षणाः,
तत्सेवाभिरताः सखीगणवृताः सख्यस्तथा भावये।।७।।
तद्वाह्ये नवगोपबालकवराः दिव्यांगभूषाम्बराः,
वेण्याद्याहलशृंगवेत्रसहितास्तन्न्यस्तबुद्धीक्षणाः।
तद्वाह्ये किल कामधेनुकुलजा हुंकार शब्दान्विताः,
गावोप्याभरणान्विताः परिवृतस्तन्न्यस्त बुद्धीक्षणाः।।८।।
तद्वाह्ये दिशि पूर्वके विधिशिवसेन्द्रादि देवा वराः,
दक्षांगे ऋषयश्च पश्चिमगतां कौमारवेशं विभो।
वामेश्च सरसांगणा गति परां गन्धर्वविद्याधरा—
श्चोर्द्ध्वंध्येयमतंद्रुतं भगवतो वीणाधरं नारदं।।९।।
जपादौ चिन्तयेद्देवं परब्रह्मं सनातनम्।
कृष्णं कमलपत्राक्षं संसृतेर्मुक्तिमाप्नुयात्।।१०।।

इति श्रीमन्निम्बार्क सम्प्रदायाचार्यानुकूल
श्रीमद्गोपाल अनुध्यानाष्टकं सम्पूर्णम्।

श्रीबालगोपाल दशकम्

।। श्रीगोपालाय नमः ।।

तीरपयोनिधिवृक्षनिवासं, हास्यकटाक्षज वंशनिनादं।
श्यामलसुन्दर नित्यविलासं, तं प्रणमामि च बालगोपालम्।।१।।

गोपवधूजनमोहनकारं, अंगंगतिरतिरंग विहारं।
गोपवधूजन सेवितपादं, तं प्रणमामि च बालगोपालम्।।२।।

गोगिरिधारण गोकुलतारण, चन्दनचर्च्चित लोचनभारं।
नीलकलेवर शोभितहारं, तं प्रणमामि च बालगोपालम्।।३।।

यादव माधव केशव शौरे, श्रीधर भूधर कृष्ण मुरारे।
तारय, तारय हर मे पापं, तं प्रणमामि च बालगोपालम्।।४।।

केलिकुतूहल कुन्तल शोभं, शैशव वामन लास्य विलासं।
कंसनिपातित मुष्टिकघातं, तं प्रणमामि च बालगोपालम्।।५।।

श्रीब्रजराजसुनन्दकुमारं, शुकनारदसंसेवित पादम्।
जननिविराजित केशवचित्तं, तं प्रणमामि च बालगोपालम्।।६।।

श्रीमधुसूदन बाल्य विचित्रं, गोपबधूजनसेवित चित्तं।
व्याजनचित्तनिषेवितगात्रं, तं प्रणमामि च बालगोपालम्।।७।।

कंसनिसूदन केशिविनाशं , तालवनेन च धेनुकनाशम्।
देवकीनन्दन सुन्दर कृष्णं, तं प्रणमामि च बालगोपालम्।।८।।

कुण्डलमण्डित गण्ड कपोलं, कण्ठविभूषितनीलविलोचम्।
उज्ज्वलकंकणबाहुमृणालं, तं प्रणमामि च बालगोपालम्।।९।।

गो गिरिधारण मे वरदानं, काम्यमनुरत सिद्धिददानम्।
जय रघुनन्दन सुन्दर कृष्णं, तं प्रणमामि च बालगोपालम्।।१०।।

श्रीगोपाल नीराजन स्तव

।। श्रीगोविन्दाय नमः ।।

जयदेव जयदेव
वंदे गोपालम्।
मृगमद शोभित भालं, मृगमद शोभितभालं।
करुणाकल्लोलं, (जय) जयदेव जयदेव।।१।।

निर्गुण सगुणाकारं, संह्रतभूमारं
(जय) संह्रतभूमारम्।
मुरहर नन्दकुमारं, मुरहर नन्दकुमारम्।
मुनिजन सुखकारं, (जय) जयदेव जयदेव।।२।।

वृन्दावन संचारं, कौस्तुभमणिहारं
(जय) कौस्तुभमणिहारम्।
करुणापारावारं, करुणापारावारं,
गोवर्धनधारम्, (जय) जयदवे जयदेव।।३।।

कम्बुग्रीवं कौस्तुभमणि कंठाभरणं,
(जय) मणिकण्ठाभरणं।
श्रीवत्सादिक वक्षो, श्रीवत्सादिक वक्षो,
लम्बित वनमालां, (जय) जयदेव जयदेव।।४।।

वाहुविभूषित युगलं, करतलधृत वेणुं
(जय) करतल धृतवेणुम्।
त्रिवली शोभितमुदरं, त्रिवली शोभितमुदरम्।
नव जलधर नीलम्, (जय) जयदेव जयदेव।।५।।

कुंचित कुंतल नीलं शरदेंदु वदनं,
(जय) शरदेंदु वदनम्।
मणिगण मण्डित कुण्डल, मणिगण मण्डित कुण्डल,
राजित श्रुति युगलम्, (जय) जयदेव जयदेव।।६।।

विकसेन्दीवर नयनं, विलसितभ्रूयगुलं
(जय) विलसित भ्रूयगुलम्।
बिम्बाधरमणि सुन्दर, बिम्बाधरमणि सुन्दर।
नासामणि लोलम्, (जय) जयदेव जयदेव।।७।।

मुरलीवाद्यं लीला, सप्त स्वर गीतं
(जय) सप्त स्वर गीतम्।
जलचर स्थलचर वनचर, जलचर स्थलचर वनचर।
रंजित संगीतम्, (जय) जयदेव जयदेव।।८।।

स्तम्भित यमुना तोयं, अगणित तव चरितं
(जय) अगणित तव चरितम्।
गोपीजन मनमोहन, गोपीजन मनमोहन।
यत्र श्रीकान्तम्, (जय) जयदेव जयदेव।।६।।

रासक्रीडामण्डित वेष्टित व्रजललनं
(जय) वेष्टित व्रज ललनम्।
मध्ये ताण्डव लास्यं, मध्ये ताण्डव लास्यम्।
पंकज दल नयनम्, (जय) जयदेव जयदेव ।।१०।।

कुसुमाकारि सुरंजित मन्दस्मित वदनं,
(जय) मन्दस्मित वदनम्।
कालिय फणिवरदमनं, कालिय फणिवर दमनम्।
पक्षेश्वर गमनम्, (जय) जयदेव जयदेव।।११।।

अभिनवनीताहारं, करतल दधि गोलं
(जय) करतलदधि गोलम्।
लीला नटवर खेलन, लीला नटवर खेलन।
धृतकांचलं शीलम्, (जय) जयदेव जयदेव।।१२।।

निजजन रक्षणशीलं, विदलितरिपुदलनं
(जय) विदलित रिपुदलनम्।
भगवन्तं जनपालं, भगवन्तं जनपालम्।
वन्दे गोपालम्, (जय) जयदेव जयदेप।।१३।।

किंकिणि मेखलमध्ये, पीताम्बर वसनं
(जय) पीताम्बर वसनम्।
सिञ्जित नूपुर मधुरं, सिञ्जित नूपुर मधुरम्।
विकसित पदयुगलम्, (जय) जयदेव जयदेव।।१४।।

गोगोपीपरिवेष्टित, यमुनातट संस्थं
(जय) यमुनातट संस्थम्।
व्यासाभयदं सुखदं व्यासाभयदं सुखदम्।
भुवनत्रय पालम्। (जय) जयदेव जयदेव
वन्दे गोपालम्, (जय) जयदेव जयदेव।।१५।।

इति श्रीव्यास (?) विरचितं गोपालं नीराजन स्तवनं सम्पूर्णम्।।

श्रीशुभ संवत् १९१४ ज्येष्ठ शुल्क १० भौमे लि० पं० रामजी रामेण अनूपशहर मध्ये श्रीभागीरथि तीरे गिरिधारिणो मंदिरे।

संस्थान के संस्थापक–अध्यक्ष

डॉ. रामदास गुप्त

(9-8-1937 —26-7-1997)

वृन्दावन शोध संस्थान

• एक परिचय •

वृन्दावन शोध संस्थान की स्थापना डॉ. रामदास गुप्त के सद्प्रयत्नों से सन् १९६८ में हुई थी। वृन्दावन के लोई बाजार की एक पुरानी धर्मशाला के दो कक्षों में आरम्भ हुआ यह संस्थान अब रमणरेती में आकर्षक हरीतिमा के बीच गुलाबी पत्थर के एक भव्य भवन में स्थित है। संस्थान का संचालन वृन्दावन शोध समिति द्वारा होता है जो एक पंजीकृत समिति है। संस्थान मुख्यतः केन्द्र तथा उत्तरप्रदेश सरकारों द्वारा वित्तपोषित है और इसकी शासी परिषद् में उनका समुचित प्रतिनिधित्व है।

संस्थान में लगभग २७००० हस्तलिखित ग्रन्थ संग्रहीत हैं जिनमें संस्कृत, हिन्दी, बँगला, ओड़िया, पंजाबी, गुजराती , तमिल, तेलुगु, मलयालम आदि सभी भारतीय भाषाओं तथा लिपियों के ग्रन्थ शामिल हैं। लगभग २१००० ग्रन्थों के कैटलॉग प्रकाशित हो चुके हैं तथा शेष पर काम चल रहा है। विषय की दृष्टि से इस ग्रन्थ-संग्रह में अद्भुत विविधता है। धर्म, दर्शन, कर्मकाण्ड, काव्य के अतिरिक्त ज्योतिष, आयुर्वेद, शिल्पशास्त्र, शालिहोत्र, कामशास्त्र, रत्नशास्त्र आदि के ग्रन्थ भी इस संग्रह में उपलब्ध हैं। समय–समय पर इस ग्रन्थराशि की जाँच में ऐसे ग्रन्थ मिलते रहते हैं जिनका नाम या जिनके रचनाकार का नाम या दोनों ही अभी तक अज्ञात रहे हैं। ग्रन्थों के अतिरिक्त अन्य अनेक महत्त्वपूर्ण दस्तावेज, यथा शाही फ़रमान, खाता बही, पत्राचार आदि भी संस्थान में सुरक्षित हैं। हस्तलिखित सामग्री के रख–रखाव तथा संरक्षण के लिए प्रशिक्षित व्यक्तियों द्वारा चलायी जा रही एक संरक्षण प्रयोगशाला,

माइक्रोफ़िल्मिंग के अत्याधुनिक उपकरण, फोटोग्राफी अनुभाग आदि शोधार्थियों की सहायता के लिये संस्थान में अनवरत कार्यरत हैं। शोधार्थियों की सुविधा के लिये संस्थान में एक सन्दर्भ पुस्तकालय तथा एक अतिथिशाला भी है। हस्तलिखित ग्रन्थादि के अतिरिक्त संस्थान में एक ब्रजसंस्कृति संग्रहालय भी स्थित है जिसमें ब्रज की कला और शिल्प सम्बन्धी सामग्री प्रदर्शित है।

भारतीय इतिहास, साहित्य तथा संस्कृति से सम्बन्धित किसी भी विषय पर शोध तथा प्रकाशन संस्थान के कार्यक्षेत्र में शामिल है यद्यपि ब्रजक्षेत्र के ऊपर इसका विशेष बल है। तदनुसार ब्रजमण्डल की साहित्यिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, ऐतिहासिक एवम् पुरातात्विक निधि का संग्रह, संरक्षण, अध्ययन, शोध और प्रकाशन संस्थान का मुख्य उद्देश्य है। संस्थान डॉ. बी. आर. अम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा द्वारा हिन्दी और संस्कृत में पी-एच. डी. की उपाधि हेतु शोध-कार्य के लिये शोध-केन्द्र के रूप में मान्यता प्राप्त है और संस्थान में अनेक देशी-विदेशी विद्वानों ने शोध कार्य किये हैं।

सम्प्रति संस्थान एक महत्त्वाकांक्षी प्रकाशन योजना कार्यान्वित करने में संलग्न है और आगामी वर्षों में कई महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों के प्रकाश में आने की आशा है।

संस्थान विद्वानों और जन-साधारण के आशीर्वाद तथा सहयोग की कामना करता है तथा समानधर्मी संस्थाओं के साथ मिलकर भारतीय संस्कृति की सेवा करने का इच्छुक है। संस्थान का सभी से एकमात्र निवेदन है, "सांस्कृतिक धरोहर की रक्षा में हमारी सहायता करें।"

संस्थान को दान या चन्दे के रूप में दी जाने वाली राशि भारतीय आयकर अधिनियम १९६१ की धारा ८० जी के अन्तर्गत करमुक्त है।

वृन्दावन शोध संस्थान

रमणरेती, वृन्दावन–281121, उ. प्र., भारत

फ़ोन–(0565) 443828 • फ़ैक्स–(0565) 442476

• ग्रन्थ प्रभु के विग्रह हैं •

वृन्दावन शोध संस्थान के प्रकाशन

Publications of the Vrindavan Research Institute

CATALOGUES

1. A Catalogue of Sanskrit Manuscripts in the Vrindavan Research Institute, Part-I, Rs. 95.00
2. A Catalogue of Sanskrit Manuscripts in the Vrindavan Research Institute, Part-II, Rs. 170.00
3. A Catalogue of Sanskrit Manuscripts in the Vrindavan Research Institute, Part III, Rs. 125.00
4. A Catalogue of Sanskrit Manuscripts in the Vrindavan Research Institute, Part IV, Rs. 175.00
5. A Catalogue of Sanskrit Manuscripts in the Vrindavan Research Institute, Part V, Rs. 225.00
6. A Catalogue of Hindi Manuscripts in the Vrindavan Research Institute, Part I, Rs. 65.00
7. A Catalogue of Hindi Manuscripts in the Vrindavan Research Institute, Part II, Rs. 180
8. A Catalogue of Bengali Manuscripts in the Vrindavan Research Institute, Rs. 150.00
9. A Catalogue of Manuscripts Microfilmed by the VRI, Part I, Rs. 85.00
10. A Descriptive Catalogue of Punjabi Manuscripts in the VRI, Rs. 175.00

• Note - A set of five parts of the Catalogues of Sanskrit Manuscripts is available at a concesssional price of Rs. 650 only.

शोधपरक पुस्तकें

1. ब्रज की रासलीला
   लेखक–प्रभुदयाल मीतल — रु. 100.00
2. दशश्लोकी (सटीक)
   सम्पादक–डॉ. कमलेश पारीक — रु. 30.00
3. केवलराम कृत रासमान के पद
   सम्पादक–एलन एंट्विसिल — रु. 30.00
4. Rasman Ke Pad
   Editor-A. W. Entwistle — Rs. 45.00
5. स्वामी चरणदास कृत रहस्य दर्पण एवं रहस्य चन्द्रिका
   सम्पादक–डॉ. रामदास गुप्त तथा डॉ. शरणबिहारी गोस्वामी
   रु. 45.00 (पेपर बैक) रु. 60.00 (सजिल्द)
6. रसिक कर्णाभरण (लीला) — रु. 40.00 (पेपर बैक)
   सम्पादक–डॉ. नरेशचन्द्र बंसल — 60.00 (सजिल्द)
7. स्मरण दर्पण — रु. 25.00 (पेपर बैक)
   सम्पादक–गोपालचन्द्र घोष — रु. 35.00 (सजिल्द)
8. यमुना एवं यमुनाष्टक — रु. 110.00 (पेपर बैंक)
   सम्पादक–वृन्दावन बिहारी गोस्वामी — रु. 125.00 (सजिल्द)
9. छन्दः कौस्तुभः — रु. 150.00 (पेपर बैक)
   सम्पादक–डॉ. कमलेश पारीक — रु. 175.00 (सजिल्द)
10. मथुरा माहात्म्य — रु. 100.00 (पेपर बैक)
    सम्पादक–डॉ. उमा भास्कर — रु. 150.00 (सजिल्द)
11. Vrindavana in Vaishnava Literature
    by Dr. Maura Corcoran — Rs. 375.00
12. ब्रज की लोक–कथाएँ — रु. 80.00 (पेपर बैक)
    लेखक–डॉ. ब्रजभूषण चतुर्वेदी — रु. 90.00 (सजिल्द)
13. An Early Testamentary Document in Sanskrit
    by Tarapada Mukherjee and J. C. Wright — Rs. 10.00
14. Vaishnava Tilakas by A. W. Entwistle — (under reprint)
15. श्रीगोपाल पाठावली
    सम्पादक–चन्द्रधर त्रिपाठी तथा गोपालचन्द्र घोष
    रु. 40.00 (पेपर बैक) रु. 100.00 (सजिल्द)

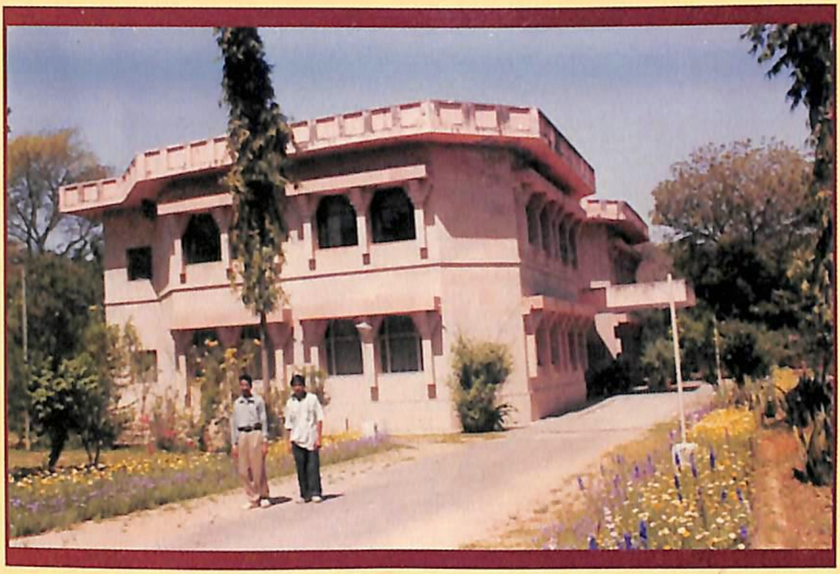

प्राचीन ग्रन्थों तथा अन्य सांस्कृतिक निधियों के
संरक्षण में तत्पर

वृन्दावन शोध संस्थान

रमण रेती, वृन्दावन–२८११२१ (उ. प्र.) भारत

Vrindavan Research Institute

Raman Reti, Vrindavan-281121 (U. P.) INDIA

• Chitralekhaa 442415